सम्पादक

डॉ. हारून रशीद सिद्दीकी

सहायक

मु. गुफ़रान नदवी

मु. हसन अन्सारी

हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय

मासिक सच्चा राही

मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

पो0 बॉ0 नं0 93

टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ

फोन : 0522–2740406

: 0522–2741221

E-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु0 12/-
वार्षिक	रु0 120/-
विशेष आजीवन	रु0 500/-
विदेश में (वार्षिक)	30 पाउंड [illegible]

चेक / ड्राफ्ट पर यह लिखें

"सच्चा राही"

पता

सेक्रेटरी, मजलिसे सहाफ़त व नशरियात

नदवतुल उलमा, लखनऊ, 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

Vision Computers- 9839844587

हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

नवम्बर, 2009 वर्ष 8 अंक 9

मदीना तय्यिबा

हरमैन शरीफैन के उलमा का किसी शै को अच्छा समझना बेशक उसके इस्तेहबाब की दलील है, यह ज़मीने पाक वह है जहां कभी भी शिर्क नहीं हो सकता, हदीसे पाक में है कि शैतान मायूस हो चुका कि अहले अरब उस की परस्तिश करें, मदीना पाक की ज़मीन इस्लाम की जाए पनाह है और कुफ्फार व मुशरिकीन से महफूज़ रहने वाली है, मिश्कात बाबे हरमे मदीना में है कि मदीना पाक बुरे लोगों को इस तरह निकाल फेंकता है जैसे लुहार की भट्टी लोहे के मैल को।

मुफ्ती अहमद यार ख़ाँ बरेलवी

क्या इस के बाद भी हरमैन के उलमा को बुरा कहा जा सकता है?

आपके पते के साथ जो ख़रीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना ख़रीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फ़ोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

इरतिदाद	डा0 हारून रशीद सिद्दीकी	3
कुर्आन की शिक्षा	मौ0 मु0 मंजूर नोमानी	5
जीवन सादा और सरल हो	अभिराम सत्यज्ञ	6
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	7
कारवाने ज़िन्दगी	मौ0 सैय्यद अबुल हसन अली हसनी	9
जग नायक	मौ0 स0 म0 राबे हसनी	11
नअ़ते नबी (स0)	मौ0 मु0 सानी हसनी	13
पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य	अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी	14
इस्लामी सभ्यता का स्तर	मौ0 सय्यद मुहम्मदुल हसनी रह0	16
अल्लाह की निशानियाँ	अयाज़ अहमद फारूकी	18
अर्ज़े अहक़र	डॉ0 अकरम खाँ.	19
इस्लामी इन्साफ देखकर यहूदी मुसलमान	इदारा	20
हम कैसे पढ़ायें	डॉ. सलामत उल्लाह	21
आप के प्रश्नों के उत्तर	मुफ्ती मो0 ज़फर आलम नदवी	23
यतीम की कहानी अपनी जबानी	इदारा	25
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम	इरशाद अली खाँ	27
भारत का संक्षिप्त इतिहास	इदारा	31
आज़ादी के बाद	इदारा	35
स्वतंत्रता संग्राम में	मौ0 अब्दुल वकील नदवी	36
हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण	इदारा	39
अतंर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

इरतिदाद (धर्म परित्याग)

डॉ0 हारून रशीद सिद्दकी

आज मुस्लिम मुआशरा जिन बुराइयों का शिकार है, उन में सूद की लअनत है, ज़िना कारी है, शराब ख़ोरी, बदकारी है, ग़ीबत है चुग़ली है और यह सब लअनतें दीन से दूरी और बेज़ारी का नतीजा हैं। आज हाल यह हो गया है कि मुसलमान घरानों में, नमाज़, रोज़े और दीन की पासदारी से ज़ियादा टी0वी0 सीरियलों पर तवज्जुह दी जाती है। इस्लामी वाक़िआत बयान करने से ज़ियादा, फ़िल्मों का तज़किरा होता है जिस का लाज़िमी नतीजा मुस्लिम लड़कियों के इरतिदाद की शक्ल में हमारे सामने आ रहा है।

मुस्लिम समाज की एक और संगीन बुराई जहेज़ की लअनत है जिस की वजह से हज़ारों..... मुस्लिम बहनें बिन बियाही अपने वालिदैन की दहलीज़ पर बैठी हैं और वालिदैन उनकी फ़िक्र में कब्ल अज़ वक़्त ज़ईफ़ी को पहुँच रहे हैं, जहेज़ की लअनतं ने मुस्लिम समाज में जो बुराइयाँ पैदा कर दी हैं वह हद से सिवा होती जा रही है। आए दिन मुसलमानों में ऐसी–ऐसी शादियाँ हो रही हैं जिन का ज़िक्र करना तक मुहाल हो गया है। (रोज़नामा 9.8.09 सियासत हैदराबाद के हवाले से)

अख़बार ने तवील मज़मून शायअ किया है, यह हिस्सा उसी से मुक़तबिस (चयित) है। इसी ख़बर या मजमून को लेकर 17 अगस्त के राष्ट्रीय सहारा में एक मुरासला भी शायअ हुआ है। ऐसे मज़ामीन बे नतीजा, माहौल (वातवरण) खराब करने वाले और इस्लाह (सुधार) के बजाए और फ़साद फैलाने वाले होते हैं। लेकिन चूंकि यह मेडिया में आ चुके है इस लिये मजबूरन लिखना पड़ रहा है।

पहली बात तो यह कि लड़कियों के बिगड़ने नहीं मुरतद होने की जो तअ्दाद लिखी गई है उस में बड़ा मुबालग़ा है। दूसरे यह लड़कियाँ उ़मूमन दौलत मन्द, मंसब वाले, फ़ारवर्ड, इस्लाम से ना वाक़िफ़ (अपरिचित) घरों की होती हैं, इन की देखा देखी या इन की ख़बरों (सूचनाओं) से मुतअस्सिर (प्रभावित) इस्लाम से ना वाक़िफ़ दूसरी लड़कियाँ भी उनके पीछे चल पड़ती हैं। इस्लाम का तअ्ल्लुक़ दिल से अल्लाह व रसूल पर ईमान लाने से है। कितने लोग किसी मुस्लिम घर में पैदा हुए, इस्लामी सिक़ाफ़त अपना ली इस्लाम सीखा नहीं, संगत दूसरों की रही हम उन पर कोई हुक्म नहीं लगा सकते मगर वह खुद अपने दिल को टटोल कर फैसला कर सकते हैं कि उन का अल्लाह और उस के रसूल पर ईमान की क्या कैफीयत है।

बेशक हैदराबाद में भी दीनी तंज़ीमें (समितियाँ) हैं और हर शहर में हैं। इन तंजीमों का काम इस्लामी मुआशरे (समाज) को उनकी हालत से आगाह करना और इस्लाम का सहीह इल्म देना है। न हाथ पकड़ना उनके इख़्तियार में है न दिल बदलना। अल्लाह की मसलहत दिल मुतअस्सिर करने वाले नायाब हैं। यह एयर कन्डीशन वाले किसी कों दो रोटी खिला कर अपना गिरवीदा (मोहित) तो बना सकते हैं यअनी अपने से तो जोड़ सकते हैं लेकिन अल्लाह से जोड़ना इनके लिये आसान नहीं। लेकिन जो अल्लाह की जानिब झुकता है वह महरूम नहीं होता "वयहदी इलैहि मंय्युनीब" (और अल्लाह उसे हिदायत देता है जो उस की जानिब झुकता है।) कभी अल्लाह तआला किसी को अपने फज्ले ख़ास से भी हिदायत देते हैं "अल्लाहु यजतबी इलैहि मंय्यशाउ" (अल्लाह अपनी तरफ खींच लेता है जिसे चाहता है।) (देखें सूर–ए–शूरा : 13) तंजीमें हों या अफराद, (समितियों के माध्यम से काम करने वाले हों या व्यक्तिगति) उन का

काम तो इतना है कि वह "अपने रब के रास्ते की तरफ हिक्मत और मौअ़िजत (तत्व दर्शिता और सदुपदेश) से बुलाओ" (16:125) को अपनाएं और अपने भाई की गुमराही पर आँसू बहाएं, रही हिदायत यह तो जब अल्लाह ने अपने रसूल (सल्लललाहु अलैहि व सल्लम) से सीधे फरमा दिया कि "जिसे आप चाहें उसे हिदायत नहीं दे सकते लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है।" (28:56) ख़ुद अल्लाह के रसूल (सल्लललाहु अलैहि व सल्लम) को हुक्म हुआ "कह दीजिये कि यह हक़ यअनी इस्लाम तुम्हारे पालन हार की तरफ से है जिस का जी चाहे इस पर ईमान लाये जिस का जी चाहे इन्कार कर दे। हम ने (इन्कार करने वाले) जालिमों के लिये जहन्नम की ऐसी आग तय्यार कर रखी है जिन की कनातें (दीवारें) उन को घेरे होंगी और अगर वह प्यास के सबब पानी माँगेंगे तो उन को ऐसा पानी दिया जाएगा, जो गर्म तेल की तलछट की तरह होगा जो मुंहों को भून डालेगा, कैसा बुरा पानी होगा और (उनके लिये जहन्नम) कितना बुरा ठिकाना होगा। बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्हों ने भले काम किये, तो भले ढंग से जो भले काम करे उस के बदले को हम बेकार न करेंगे, ऐसे लोगों के लिये हमेशा रहने के बाग हैं, उनके (मकानों के) नीचे नहरें बहती होगी, उनको वहाँ सोने के कंगन पहनाए जाएंगे, बारीक और मोटे रेशम के हरे रंग के कपड़े पहनाए जाएंगे, वह वहाँ मसेहरियों पर तकया लगाए बैठे होंगे, कितना अच्छा बदला है और उनके रहने के लिये बिहिश्त कितनी अच्छी जगह है। (18:29–31)

दीन का काम करने वाले हालात से वाकिफ हैं, इन हालात में उनसे जो कुछ हो सकता है वह कर रहे हैं, अगर उन से कहीं कोताही हो रही है तो कोई दीन का काम करने वाला ही उनकी रहनुमाई (पथ प्रदर्शन) कर सकता है। मीडिया तो सिर्फ ख़बर देगा चाहे उस का अच्छा असर पड़े चाहे बुरा। जब कि मुस्लिम मीडिया का मकसद (उद्देश्य) मुस्लिम समाज में इस्लामिक सुधार भी होना चाहिए। अख़बार में जिस तरह मुस्लिम लड़कियों की बेराह रवी छापी गई यह गलत भी है और बेसूद (लाभ हीन) भी अखबार वालों को चाहिये था कि पहले जिन असबाब से कुछ लड़कियाँ बहक रही हैं उन असबाब को दूर करने की तदबीरें बताते, फिर वह मुस्लिम लड़कियों की रहनुमाई करते, मगर उनको तो बढ़ा चढ़ा कर खबर छाप कर दूसरी सुधरी हुई लड़कियों को भी उसी हम्माम (स्नानगृह) में नहाने पर उभारना है, वरना सच यह है कि आलमी पैमाने पर (विश्व स्तर पर) जहाँ गुसलमानों पर जुल्म हो रहा है वहीं आलमी पैमाने पर इल्मी एअतिबार से (ज्ञान पूर्वक) गैर मुस्लिमों का इस्लाम कबूल करना (स्वीकार करना) भी जारी है और मेरे इल्म (ज्ञान) में उन में लड़कियों का औसत (मध्यक) जियादा ही है। आए दिन मैगजीनों में ऐसी लड़कियों के इस्लाम लाने के बयानात ख़ुद उनके क़लम से छपते रहते हैं।

आप जाइज़ा लें तो बिगड़ने वाली लड़कियों के घर वालों को आप इस्लामी अ़काइद (इस्लामिक आस्थाओं) से नावाकिफ़ (अपरिचित) और इस्लामी अअ़माल (कर्मो) से आज़ाद पाएंगे। ऐसी सूरत में उन लड़कियों का कुसूर सिर्फ़ यह है कि उन्होंने इस्लाम का तआ़रुफ़ (परिचय) ख़ुद क्यों नहीं ह़ासिल किया? दीनी काम करने वाली तंज़ीमें अपना काम कर रही हैं, मस्जिदों के इमाम, मदरसो के मुअ़ल्लिमीन (अध्यापक) भी अपना काम कर रहे हैं लेकिन मग़रिबी फैशन, मग़रिबी सक़ाफ़त (पाश्चात्य सभ्यता) बाज़ारों, दूकानों की माडरन सजावट सनीमा, टी0वी0, इन्टर नेट, मारकेटों और आफ़िसों का गखलूत निजाम, मखलूत तअ़लीम (सह शिक्षा) गन्दे नावेल, नंगी तस्वीरों बे दीनी के मज़ामीन (नास्तिकी लेखों) ने मुआ़शरे की फ़ज़ा (सामाजिक वातावरण) इतनी गन्दी कर दी है कि मौजूदा दीन की तबलीग़ व इशाअत का काम नाकाफ़ी हो रहा है।

शेष पृष्ठ 6

कुरआन की शिक्षा

मौलाना मु0 मंजूर नोमानी

प्रवचन एवं धर्मोपदेश

यूं तो सारा कुर्आन ही नसीहत व मौइजत (सदोपदेश) है। और मुख्तलिफ़ उन्वानों के अंतर्गत जो कई सौ आयतें हम ने यहाँ तक इस लेख में लिखी हैं, वे सब ही किसी न किसी नसीहत व सदोपदेश को लिये हुये हैं। लेकिन कुर्आने–पाक में बहुत से मुकामात ऐसे भी हैं जिन की हैसियत ख़ास कर खुतबात (अभिभाषण) व मवाइज़ (वाज़–सदोपदेश) की है। और पिछले शीर्षकों में से किसी के तहत हम ने उन को दर्ज भी नहीं किया है। अब इस उन्वान के अंतर्गत हम उन ही को लिखना चाहते हैं।

अगरचे कुर्आने–मजीद में ऐसे मकामात पचासों क्या सैकड़ों हैं लेकिन यहाँ हम सिर्फ दस मकामात की चन्द–चन्द आयते कुर्आने–मजीद की तर्तीब ही के लिहाज़ से दर्ज करने पर बस करेंगे। यही हमारे इस लेख का आखिरी उन्वान और गोया "खातिमतुल किताब" (किताब का अंत) है।

अल्लाह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है

आजमाईशों के दौर में सब्र और नमाज़ से मदद हासिल की जाये

तर्जमाः ऐ ईमान वालो! (मुश्किलात संकटों के मुकाबले के लिये) सब्र और नमाज़ से मदद लो। अल्लाह (की मदद) सब्र करने वालों के साथ है, (और नमाज़ के जरीये बन्दा अपने रब से ख़ास राबिता (संबंध) पैदा करता है और उस के हुजूर में पहुँच जाता है) और (ऐ अहले–ईमान तुम में से) जो लोग अल्लाह की राह में शहीद कर दिये जायें उन के बारे में न (तो ऐसा खियाल करो और न जबान से) कहो, कि वे मुर्दे हैं, (वे मरे नहीं हैं) बल्कि एक ख़ास हयात के साथ वे ज़िन्दा है लेकिन तुम उन की इस ख़ास ज़िन्दगी का शुअूर (ज्ञान) नहीं रखते हो। और हम जरूर तुम्हें आजमाइशों (परिक्षाओं) की भेट्टी में डालेंगे और खौफ़ व खतर और फाका–कशी और जान व माल के नुक्सानात और पैदावार की कमी में, तुम को हम मुब्तला करेंगे (क्योंकि हक़ पर चलने वालों और हक़ की दावत देने वालों के लिये इन मन्जिलों से गुजरना जरूरी है।) और ऐ पैगम्बर! फलाह वह कामरानी की बशास्त दीजिये उन साबिर बन्दों को, ज़िन का हाल यह है कि जब उन पर कोई मुसीबत आती है तो वे (दिल–व–ज़बान से) कहते हैं कि हम अल्लाह के हैं और (यहाँ की यह चन्द रोज की ज़िन्दगी खत्म करके) हमें उसी की तरफ पलट कर जाना है। ये वे बन्दे है जिन पर उन के पर्वर्दगार की ख़ास इनायतें और रहमतें हैं और यही हिदायत पाने वाले हैं। (अलबकरह : 153–157)

मुसीबतों और आजमाइशों के वक्त के लिये इन आयतो में अहले ईमान की तसल्ली और रहनुमाई का कितना काफी सामान है।

1– सब्र की सिफत अपने अन्दर पैदा करना। 2– और नमाज़ के जरिये अल्लाह तआला से राबिता काइम करना। 3– और इस हक़ीकत का ध्यान और मुराकबा कि हम और हमारा सब कुछ अल्लाह ही का है, और अल्लाह ही के लिये है और हम को पलट कर उसी के हुजूर में जाना है, ये तीनों ताकत के वे खजाने हैं ज़िन के अपने पास होते हुये कोई साहबे–ईमान अपने को कभी कमजोर नहीं महसूस कर सकता।

बन्दों को उनके मालिक का बुलावा जन्नत और रहमत की तरफ

सूरः–आलि अिम्रान में इर्शाद फर्माया गया है :–

तर्जमाः और फर्मा बरदारी करो अल्लाह की और उस के रसूल की ताकि तुम रहमत के मुस्तहक़ (पात्र) हो जाओ। (अल्लाह व रसूल के फर्माबरदार बन्दे ही रहमत के मुस्तहक़ होते हैं) और तेजी से बढ़ो अपने पर्वर्दगार की बखशिश की तरफ और

उस जन्नत की तरफ जिस की वुस्अत (फैलाव) तमाम आस्मान व ज़मीन की वुस्अत के बराबर है जो अहले–तक्वा के लिये तैयार और आरास्ता की गयी है; (जिन का तरीका यह है कि) वे (नेकी की राहों में) खर्च करते हैं फरागत व खुशहाली में भी और तकलीफ व तंग दस्ती की हालत में भी, और वे पी जाने वाले हैं गुस्से को, और मुआफ कर देने वाले हैं लोगो के कुसूर; और अल्लाह महब्बत करता है ऐसे नेकोकारों से और (वे बन्दे भी मग्फिरत व जन्नत के मुस्तहक़ हैं) जिनका हाल यह है कि जब कोई बुरी और बेहयाई की हर्कत उन से हो जाती है या कोई गुनाह कर के वे अपने ऊपर जुल्म कर बैठते हैं तो फौरन अल्लाह उन को याद आ जाता है, फिर वे अपने उस मालिक से अपने गुनाहों की मुआफी और बखशिश चाहते हैं। और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को बख्श सके। और वे जान बूझ कर अपनी उन बद आमालियों पर इस्रार (आग्रह) नहीं करते। ये सब बन्दे वे हैं कि उन की जज़ा और उन का सिला (बदला) बखशिश है उन के पर्वर्दगार की तरफ से और बहिश्ती बागात हैं जिनके नीचे नहरें जारी हैं। और वे हमेशा उन में रहेंगे और यह अच्छा बदला है उन अमल करने वालों के लिये। (आलि इम्रान : 132–136)

गोया हमारे मालिक व पर्वर्दगार का एलान है कि मेरी रहमत और जन्नत का दरवाज़ा उन गुनेहगार बन्दों के लिये भी खुला हुआ है जिन्हें अपने गुनाहों पर इस्रार न हो और वे गुनाह के बाद तौबा कर के और बखशिश के तालिब (इच्छुक) बन कर मेरी तरफ रुजूअ (प्रवृत्त) हों।

ऐ अल्लाह हम तुझ से तौबा की तौफीक़ और जन्नत का सवाल करते हैं।

❑❑

जीवन सादा और सरल हो

जीवन सादा और सरल हो,
मन निर्मल, सुन्दर–निश्छल हो।
पाप कर्म से विमुख हमेशा
सदाचार को उन्मुख हों,
पर पीड़ा में सहभागी बन
जगहित के हम सम्मुख हों
दिनचर्या बहते जल जैसी
चमकीली, पावन, निर्मल हो
इधर–उधर की भागदौड़ कर
पर निंदा में, धन लिप्सा में,
व्यर्थ कार्य, मिथ्याचारी बन
पतित न होवे हम कुत्सा में
एक प्रार्थना सूर्योदय–सी
होठों पर अपने हरपल हो
सादी रोटी लोटा भर जल
टाट झोंपड़ी, छोटा आँगन
मिल जाए वरदान समझकर
धन्य करें हम यह लघु जीवन
परोपकार के उच्च भाव से
साँसों का क्रम और सबल हो।
जीवन सादा और सरल हो।

अभिराम सत्यज्ञ जयशील

❑❑

इरतिदाद (धर्म परित्याग

दीन का काम करने वालों को चाहिये कि वह अपने काम में चौकसी लाएं और दुआओं का एहतिमाम करें, उम्मत के हालात पर आँसू बहाएं कि यह उन का फर्ज है और नबी (सल्लललाहु अलैहि व सल्लम) का तरीका है। साथ ही यह याद रखें कि "मय्यहदिल्लाहु फला मुजिल्ल लहू" जिसको अल्लाह हदायत दे उस को कोई गुमराह करने वाला नहीं और "मंय्युज़लिल्हु फला हादिया लहू" जिस को वह सीधी राह न दिखाए उस को कोई सीधी राह दिखा नहीं सकता।

जो औरतें दीनी काम कर रही हैं उनको चाहिये कि अपने हल्के (क्षेत्र) की ऐसी आज़ाद मुस्लिम लड़कियों से सम्बन्ध काइम कर के उन को आखिरत का सहीह इल्म (ज्ञान) दें। औरतों में दीनी काम हर एक का नहीं है। औरतों की तअलीम वह तरबीयत की जिम्मेदारी उन के ओलिया (अभिभावकों) पर है, लेकिन जब उनके औलिया खुद ही बे राह हों तो उनको दीन कौन सिखाए। अलबत्ता हमारा भाई जब बे राह हो रहा हो तो उस की इस्लाह की कोशिश हमारा फर्ज है। हिदायत अल्लाह के इख्तियार में है। जब वह सहीह मअनों में (वास्तव में) सुधर जाएगा तो उस से सम्बन्धित औरतों का भी सुधार मुमकिन (सम्भव) होगा।

❑❑

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तसनीम

खिलाफ शरअ़ अम्र पर नाराजगी और मलामत

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी सफर से तशरीफ लाये। मैंने चबूतरे पर एक बारीक पर्दा छोड़ रखा था जिस पर तस्वीरें थीं। आपने जब उसको देखा तो फाड़ डाला। फरमाया, ऐ आयशः (र0) अल्लाह का अजाब कियामत के दिन उन लोगों पर सख़्त होगा जो अल्लाह की सिफते ख़ल्क़ में मुशाबिहत पैदा करने की कोशिश करते हैं। (बुख़ारी–मुस्लिम)

चोरी की सज़ा के बारे में सिफारिश पर नाराज़गी

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि कबीलः मख़्जूम की एक औरत ने चोरी की। कुरैश को उसकी बड़ी फिक्र हुई। उन्होंने कहा, इसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कौन सिफारिश कर सकता है। लोगों ने कहा, सिवा उसामः (र0) के कोई जुरअत नहीं कर सकता। इसलिये कि वह रसूलुल्लाह स0 के महबूब हैं। हज़रत उसामा ने रसूलुल्लाह (स0)से सिफारिश की। आपने फरमाया कि तुम अल्लाह की हदों में सिफारिश करते हो। फिर आप खड़े हो गये और फरमाया, अगली उम्मतों को इसी बात ने हलाक किया कि जब कोई शरीफ चोरी करता तो उसको छुपा देते और अगर रजील करता तो उस पर हद कायम करते। कसम ख़ुदा की अगर मुहम्मद स0 की बेटी फातिमा (र0) चोरी करे तो उसका भी हाथ काट दूंगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

मस्जिद में गन्दगी पर नाराजगी

हज़रत अनस (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किबला के सामने थूक को देखा। आप पर बहुत गराँ गुजरा और आपके चेहरए मुबारक तक से जाहिर हो गया। फिर आप खड़े हो गये और दस्ते मुबारक से उसको खुर्चा और फरमाया, जो कोई नमाज़ मे खड़ा होता है तो वह अपने परवरदिगार से सरगोशी करता है। उसका परवरदिगार उसके और किबला के दर्मियान होता है। तो किबला के सामने न थूकना चाहिए। बायें तरफ या पाँव के पीछे थूकें। किर आपने अपनी चादर का एक कोना लेकर उसमें थूका और उसको कोने से दबा कर फरमाया, या इस तरह करो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

रअिय्यत के मुतअल्लिक सवाल

हज़रत इब्नि उमर (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, तुममें का हर शख्स अपनी जगह पर हाकिम है। उससे उसकी रअिय्यत (यानी मुकतदियों) के मुतअल्लिक उससे सवाल किया जायेगा। आदमी अपने अहल का हाकिम है, उससे रअिय्यत (यानी घर वालों) के मुतअल्लिक पूछ होगी। औरत अपने शौहर के घर की मालिका है, उसके मुतअल्लिक उससे बाजपुर्स होगी। खादिम अपने आका के माल का निगहबान है, उससे उसके मुतअल्लिक सवाल होगा। गरज तुममें का हर एक साहबे रअिय्यत है। उसकी रअिय्यत के मुतअल्लिक उससे सवाल होगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत मअकिल (र0) बिन यसार से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, अल्लाह तआला जिस बन्दे के सिपुर्द किसी रअिय्यत को करे और वह उस रअिय्यत को धोके में रखे हुए मर जाये तो अल्लाह तआला उस पर जन्नत हराम कर देगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि ख़ैरख्वाही के साथ उनकी हिफाज़त न करे तो वह जन्नत की खुश्बू न पायेगा।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि किसी अमीर के सिपुर्द मुसलमानों का कोई काम हो और वह उनके लिये फलाह व बहबूदी की फिक्र न करे तो वह उनके साथ जन्नत में न जायेगा।

हज़रत आयशः (र0) से रिवायत है कि मैंने नबी स0 से अपने इसी घर में सुना है कि ऐ अल्लाह! जो मेरी उम्मत के किसी काम पर हाकिम हो और उनपर सख़्ती करे तो तू भी उसपर सख़्ती फरमा। और जो मेरी उम्मत के किसी काम पर हाकिम हो और उनसे नर्मी से पेश आये तो तू भी नर्मी से पेश आ। (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, बनी इस्राईल में बराबर अंबिया आते रहे। एक नबी की वफात होती थी तो उनके बाद दूसरे नबी तश्रीफ ले आते; लेकिन मेरे बाद कोई नबी न होगा।

अन्क़रीब मेरे बाद बहुत खुलफा होंगे। लोगों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! फिर आप हमको क्या हुक्म देते हैं। आपने फरमाया, जिससे पहले बैअत करो उसको निभाओ। फिर पहला फिर पहला और उनको उनका हक़ दो और अपने हक़ का मुतालबा अल्लाह से करो। अल्लाह उनसे उसके मुतअल्लिक सवाल करेगा। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू मरयम (र0) अल्अजदी ने हज़रत मुआवियः (र0) से फरमाया, मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अल्लाह तआला जिसके सिपुर्द मुसलमानों का काम करे और वह उनकी ज़रूरतों, हाजतों और फक्रपर मुत्तलिअ न हो, उनसे छुपता रहे, तो अल्लाह तआला कियामत के दिन उसकी हाजतों, ज़रूरतों और उसके फक्र पर मुत्तलिअ न होगा। यह सुनकर हज़रत मुआवियः (र0) ने दो आदमी लोगों की ज़रूरतें मालूम करने के लिये मुकर्रर कर दिये। (अबूदावूद, तिर्मिजी)

मुन्सिफ़ हाकिम पर खुदा का साया

हज़रत अबू हुरैरः (र0) से रिवायत है कि नबी स0 ने फरमाया, सात आदमी हैं जिनपर अल्लाह तआला अपना साया करेगा। जिस दिन उसके (अर्श के) साये के सिवा और किसी का साया न होगा। (1) मुन्सिफ हाकिम। (2) जवान सालिह जिसने अल्लाह की अिबादत ही में नश् व नुमा पायी। (3) ऐसा आदमी जिसका दिल पस्जिद में अटका रहे। (4) वह दो आदमी जो आपस में अल्लाह के लिये महब्बत करें। मिले तो अल्लाह की रजा के लिये और जुदा हों तो उसी की खुशी के लिये। (5) वह आदमी कि जिस को कोई एज़ाज़ और हुस्नवाली औरत बुलाये और वह कहे कि मैं खुदा से डरता हूं। (6) ऐसा आदमी जो सदक़ा इस कदर छुपा के दे कि सीधे हाथ के ख़र्च की बायें हाथ को ख़बर न हो। (7) एक वह आदमी कि जो तनहाई में अल्लाह को याद क़रे तो उसकी आँखों से आँसू जारी हो जायें। (बुख़ारी–मुस्लिम)

मुन्सिफ हाकिमों का कियामत में एज़ाज़

हज़रत अब्दुल्लाह (र0) बिन अम्र बिन अलआस से रिवायत है कि रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, अद्ल करने वाले नूर के मिम्बर पर होंगे। वह जो अपनी हुकूमत में, अपने घरों मे और जो काम उनके सिपुर्द हुआ हों उसमें अद्ल करें। (मुस्लिम)

बेहतरीन अमीर व हाकिम व बदतरीन अमीर व हाकिम

हज़रत औफ़ (र0) बिन मालिक से रवियत है कि मैंने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि तुम्हारे सबसे बेहतर अमीर वह हैं कि तुम उनसे महब्बत करो, वह तुमसे महब्बत करे; तुम उनके लिये दुआ करो, वह तुम्हारे लिये दुआ करें। और तुम्हारे बूरे अमीर वह है कि तुम उनसे बुग्ज रखो, वह तुमसे बुग्ज रखे; तुम उनपर लानत करो, वह तुमपर लानत करें। हमने अर्ज किया या रसूलुल्लाह हम उनसे क्यों न लड़ें। आपने फरमाया, नहीं, जब तक वह तुममें नमाज़ कायम करें। नहीं, जब तक वह तुममें नमाज़ कायम करें। (मुस्लिम)

हज़रत अयाज़ (र0) से रिवायत है कि मैंने रसुलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि तीन आदमी जन्नत के अह्ल होंगे। (1) मुन्सिफ़ बादशाह जिसको इन्साफ़ की तौफ़िक़ मिली हो। (2) ऐसा आदमी जो करावतदार मुसलमान के लिये रहमदिल और नर्म दिल हो। (3) वह आदमी जो सवाल से बचे अगरचिः कसीरुल औलाद हो। (मुस्लिम)

❑❑

किस्त : 19

कारवाने जिन्दगी

आत्म कथा

अध्याय चार

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी

अंग्रेज़ी पढ़ने की धुन और माँ की परेशानी :–

मेरी अंग्रेज़ी शिक्षा का सिलसिला अरबी के साथ धीरे–धीरे जारी था। हमारे ही मुहल्ले में खलीलुद्दीन हंसवी साहब रहते थे जिन के हमारे हंसवा के अजीजों से और भाई साहब से बिरादराना तअल्लुकात थे वह अगरचः डाकखाने में मुलाजिम थे लेकिन पुराने जमाने में तालीम पाने की वजह से उन की अंग्रेज़ी बड़ी अच्छी थी। और पढ़ाने का मल्का था, उन्होंने अंग्रेज़ी पढ़ाने का वक़्त दिया था। जब रायबरेली जाता तों अपने बड़े मामूँ सैय्यद अहमद सईद से अंग्रेज़ी पढ़ता। उन्होंने अंग्रेज़ों से अंग्रेज़ी पढ़ी थी और अंग्रेज़ी मुहावरों और दैनिक बोल चाल के शब्दों के बड़े माहिर थे। जब दारुलउलूम में क़याम रहने लगा तो वहाँ के अंग्रेज़ी के उस्ताद मास्टर मुहम्मद समी सिद्दीक़ी साहब एम0ए0 से अंग्रेज़ी का सिलसिला जारी रखा; बाद में 1929 में मुहम्मद अल्फारूकी साहब एम0ए0, एल0एल0बी0 के पास पढ़ने के लिये जाने लगा जो लखनऊ यूनीवर्सिटी के फारसी विभाग के उस्ताद थे और बाद में गवर्नमेन्ट हाई स्कूल, सीतापुर के हेडमास्टर हो गये थे। फाजिले अदब पास कर लेने के बाद मैट्रिक पास करने का ख्याल पैदा हुआ जो उस समय के माहौल के तकाजों के अनुकूल था। अंग्रेज़ी जबान और तालीम का इकबाल अपनी उठान पर था। अभी चन्द दिन पहले हमारे खानदान के एक और अज़ीज़ हाफिज सैयद इसहाक़ हसनी जिन का आई0 सी0 एस0 (इण्डियन सिविल सर्विस) में चयन हो गया था, इसकी ट्रेनिंग लेकर लन्दन से आये थे और हमारे खानदान में इसकी धूम मची हुई थी। मेरे और भाई अबूबक्र के अलावा (जो फाजिले अदब के बाद अब एक अंग्रेज़ी स्कूल में दाखिल हो गये थे) खानदान के सब लड़के अंग्रेज़ी ही तालीम हासिल कर रहे थे। अरब साहब भी इसकी ज़रूरत के कायल थे और चाहते थे कि अरबी दाँ नवजवान अंग्रेज़ी पढ़ें। और इस के जरियः से दीन की ख़िदमत और तबलीग़ करें। दीन को फैलायें।

यही जमाना था जब मुझ पर अंग्रेज़ी पढ़ने का दौरा पड़ा, और उस का बुख़ार चढ़ा। मैंने मैट्रिक के कोर्स की किताबें खरीद लीं, हिसाब मुहल्ले के एक उस्ताद से पढ़ना शुरू किया, अंग्रेज़ी फारूकी साहब के यहाँ पढ़ने जाता था। जब वह लखनऊ से ट्राँस्फर हो गये तो मैंने बतौर ख़ुद पढ़ना शुरू किया। और अपने शौक से इण्टर के स्तर की किताबें (जो अब शायद बी0ए0 के स्तर की होंगी) डिक्शनरी से हल कर के पढ़ने लगा अभी इम्तेहान में बैठने की नौबत नहीं आई थी कि माँ को (शायद भाई साहब के जरियः) मेरी इस धुन की जानकारी हुई। उन्होंने मुझे बड़े असर करने वाले खत लिखे जिन के कुछ नमूने मैंने उनके तजकिरः "जिक्र ख़ैर" में दिये हैं। यहाँ सिर्फ एक नमूना पेश किया जाता है :–

"अली तुम किसी के कहने में न आओ, अगर खुदा की रजामन्दी हासिल करना चाहते हो, और मेरे हुक़ूक अदा करना चाहते हो तो उन मर्दों पर नजर करो जिन्होंने इल्म दीन हासिल करने में उम्र गुजार दी। उनके मर्तबे क्या थे, शाह वलीउल्लाह साहब, शाह अब्दुल अजीज साहब, शाह अब्दुल कादिर साहब, मोल्वी मुहम्मद इब्राहीम साहब और तुम्हारे बुजर्गों में ख्वाजा अहमद साहब, और मोल्वी मुहम्मद अमीन साहब जिन की जिन्दगी और मौत काबिले रश्क हुई, किस शान व शौकत के साथ दुनिया बरती, और कैसी खूबियों के साथ दुनिया से गये। यह मर्तबे कैसे हासिल हो सकते हैं। अंग्रेज़ी मर्तबे वाले तुम्हारे खानदान में बहुत हैं, और होंगे, मगर इस मर्तबः का कोई नहीं..... अली! अगर मेरे सौ अवलादें होतीं तो मैं यही तालीम देती, अब तुम ही हो, अल्लाह

तआला मेरी खुश नियती का फल दे कि सौ की खूबियाँ तुम से हासिल हों, और मैं दारैन में (परलोक में) सुर्ख रू और नेकनाम हूं और साहिबे औलाद कहलाऊँ। आमीन, सुम्मा आमीन, या रब्बल आलमीन।"

माँ की आधी रात की दुआयें भोर की तड़प का असर था कि मेरा दिल अचानक अंग्रेज़ी की और तालीम से उचाट हो गया, और मैंने कोर्स की सारी किताबें जबरदस्ती लोगों के गले लगायीं। मगर इस असाधारण धुन और लगन का यह असर हुआ कि थोड़े समय में मैंने अंग्रेज़ी की जरूरी योग्यता पैदा कर ली, और मैं अपने पढ़ने लिखने के कामों में, और बाद में ब्रिटेन और अमेरीका के सफर में इस से काम ले सका। इसके बाद शायद मुझे अंग्रेज़ी पर मेहनत करने का मौका न मिलता। अंग्रेज़ी की इतनी योग्यता पैदा हो गयी कि मैं उन किताबों का आसानी से अध्ययन कर सका जो इस्लामी विषय पर और इतिहास पर लिखी गयी हैं, और मैं इस से अभी तक फायदा उठा रहा हूं।

मौलाना मदनी का क़ियाम

हम अपने गली के इस छोटे से मकान में चार साल के क़रीब रहे, इस अवधि में भाई साहब हज को गये और सकुशल वापस आये, और मैंने अरब साहब के यहाँ की तालीम खत्म की। भाई साहब का मतब अब अल्हम्दु लिल्लाहि अच्छा चलने लगा था, आमदनी भी बढ़ गयी और खानदान के नफरी भी बढ़ी। हम लोगों की नजर उस पुराने मकान पर बराबर रही जिस में हमारा बचपन और भाई साहब की जवानी गुजरी थी, और जिस से वालिद साहब के लम्बे निवास के कारण एक जज़बाती लगाव था, इत्तेफाक से वह खाली हुआ, और भाई साहब ने उस को किराये पर ले लिया।

इसी दौरान में भाई साहब ने हज़रत मौलाना सैयद हुसैन अहमद साहब मदनी से बैअत और इरादत का तअल्लुक कायम कर लिया था। मौलाना को भाई साहब से बहुत जल्द इतना तअल्लुक पैदा हो गया कि लखनऊ में (जहाँ उनका अक्सर आना होता था) उनके मकान को मुस्तकिल कियामगाह बना लिया। इस मामूल और वजादारी (सद् व्यवहार) में सख़्त से सख़्त हालात में भी फर्क नहीं आया। इससे पहले 1928 ई0 में लखनऊ की आल पार्टीज कान्फ्रेंस में मौलाना की जियारत हुई थी। अब इस कियाम की वजह से जिस की नौबत जल्द–जल्द आती थी और बाज मर्तबः कई–कई दिन कियाम रहता था, मौलाना को बहुत क़रीब से देखने, और घर का सब से छोटा और बाशऊर फर्द होने की वजह से ख़िदमत करने का मौका मिला। बातिनी (अन्दुरुनी) कमाल और रुहानी मर्तबः को समझ पाना न उस समय था, न अब है लेकिन इतना याद है कि मौलाना के आने से घर में एक ख़ास रौनक व बरकत महसूस होती थी जिस को "नूरानियत" से ताबीर कर सकते हैं, यहाँ तक कि सादे खाने में भी (जिस के लिये मौलाना की बड़ी ताकीद थी, और अगर कोई तकल्लुफ की चीज पकती थी तो एहतजाज (विरोध) फरमाते थे। अजीब लज्जत व स्वाद महसूस होता था। मौलाना भी मुझ पर बहुत शफक़त फरमाने लगे थे। और जैसा कि एक मर्तबः भाभी साहिबः ने ज़िक्र किया, मौलाना ने भाई साहब को मेरा ख़ास ख्याल रखने की हिदायत फरमाई थी, निर्देश दिया था। यह पहली दीनी और रूहानी (आध्यात्मिक) शख़्सियत थी जिस से मैं प्रभावित और परिचित हुआ। और बाद में इस में बढ़ोत्तरी ही हुई। और वह अकीदत व महब्बत अभी तक कायम है। मुझे याद है कि यह असर मौलाना की तकरीरों या दूसरे कमालात की बिना पर नहीं था। जिन का अन्दाज़ा उस समय मेरे लिये मुश्किल था। उन की शख़्सियत (व्यक्तित्व) में ऐसा खिंचाव मालूम होता, और दिल इस तरह खिचता कि बेइख़्तियार पाँव पकड़ लेने और हाथों को बोसः देने को जी चाहता। बाद में जब कुछ समय तक शागिर्दी और सुहबत का सौभाग्य प्राप्त हुआ तो इसमें और अधिक बढ़ोत्तरी और मजबूती पैदा हुई। (जारी.....)

❑❑

किस्त : 10

जननायक

मौलाना मुहम्मद राबे हसनी

अनुवाद मु0 गुफ़रान नद्वी

नैतिक दशा और स्वभाव (मिजाज)

अरब दुष्कर्म और बलात्कारी से लज्जित नहीं होते थे, अपने बुरे कामों पर फख्र (गर्व) करते हुए अपनी कविता द्वारा उसका परिचय कराते।

शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग प्रचतिल था बदमस्ती में जो बुरे काम और बुरी बातें हो जाती थीं। उनपर लज्जित नहीं होते थे। लोंडियों को जो क़ैनात कहलाती थीं गाने बजाने के लिये पाला करते थे उनकी जिनाकारी व्याभिचारिता की आय का उनके मालिक अच्छी आमदनी (आय) समझा करते थे, जो औरतें लड़ाई में गिरफ्तार हो कर आतीं उनको कैनात में दाखिल किया जाता था, औरत किसी जानवर का दूध नहीं दुह सकती थी अगर किसी घराने की औरत ऐसा कर बैठती तो सारा खानदान (परिवार) मुकय्यद (बन्दी) समझा जाता था।

विरासत के मामले में सिर्फ बालिग मर्द हिस्सा पाते थे, तमाम औरतें और बच्चे, माँ–बाप, रिश्तेदारों की विरासत से बिल्कुल महरूम (वंचित) रखे जाते थे, बेवा (विधवा) औरत पर मृतक पति का क़रीबी रिश्तेदार अपनी चादर डाल देता था। औरत खुश हो या नाखुश, वह चादर वाले की बीवी बन जाती थी। सौतेले बेटे भी अपनी सौतेली माओं पर इस तरह काबिज हो जाया करते थे अर्थात अधिकार प्राप्त कर लेते थे।

औरतें बेपरदह खुलेआम निकला करती थीं और अपने शरीर का गुप्त से गुप्त अंग लोगों को दिखाने में शर्म नहीं महसूस करती थीं। मर्द और औरतें बदन को नील से गोदा करती थां, औरतें बनावटी बाल लगातीं, दातों को दराती से तेज कर जवानों को "जुल" दिया करती थीं। जो खानदान ज्यादा शरीफ समझे जाते थे, वह जीवित लड़कियों को ज़मीन के नीचे दफन कर देते या गहरे कुएं में ढकेल कर मार डालते थे। इस पर वह फख्र (गर्व) करते और ऊँची शराफत का निशान (प्रतीक) समझते, जुवा खेलना उनका बहुत ही मन पसन्द काम था और मशहूर लोगों के घर "आम जुवा घर" समझे जाते थे, गन्दी रुहों का अकीदा आम था और इन्सान पर ऐसी रुहो का पूर्ण अधिकार तसलीम करते थे, खयाली व वहमी देवता और देवियाँ मानी जाती थी उनकी शकले और सूरतें अजीब अजीब बनाते और उसी के मुवाफिक़ उनके बुत गढ़े जाते थे, फिर मन्दिरों में उनकी स्थापना होती और पूजे जाते थे, आम तौर पर हर एक कबीला अपना–अपना बुत अलग तजवीज किया करता था। और अपनी किसमत उसी बुत के कब्जे में समझा करता था अगर एक कबीले की अदावत दूसरे कबीले से हो जाती तो उसके बुतों से भी अदावत व नफरत की जाती थी, घोड़ दौड़ पर बाजी लगाने का बहुत रिवाज था उसे "रहान" कहते थे, घोड़ दौड़ में तीन या सात घोड़े शामिल किये जाते थे।

घोड़ो के नम्बर लगाने में कभी इतना एख़तिलाफ (विरोध) बढ़ जाता कि लड़ाई छिड़ जाती और बरसों तक जारी रहती थी, अगरचि गुलामों का आज़ाद करना गर्व और अभिमान की बात थी लेकिन आज़ाद किये हुये गुलामों पर मिलकियत का हक़ क़ायम रहता था, उस हक़ को आक़ा दूसरे के पास फरोख़्त या हिबा भी कर सकता था।

खेती बाड़ी में ज़मीन का बेहतरीन हिस्सा बुतों के नाम पर ख़ास होता, अगर उस हिस्से की पैदावार किसी प्राकृतिक हादिसे की शिकार हो जाती तो ज़मीन के दूसरे हिस्से की पैदावार से उसकी कमी को पूरा किया जाता, भूख और अकाल के समय मवेशी (पशु) का खून पी जाते थे, जिन्दह जानवर के शरीर से गोश्त काट कर खा जाते थे, जानवरों की हरकतों से या आवाजों से शगून लिया करते,

टोटके, मंत्र माने जाते थे उनकी अकल व फिक्र पर तवह–हुमात की पूरी हुकूमत थी। इन्तिक़ाम और कीना (प्रति शोध और वैभनस्य) को अच्छा समझा जाता एक एक दो दो नस्ल ऊपर के वाक़िआत का बदला लिया जाता और उसे बहादुरी का लाजिमा (उपकरण) समझा जाता।

अरब के पड़ोसी देशों मे जो बुराईयाँ मौजूद थीं उनको जल्द अपना लिया जाता, हसब नसब (गोत्रवंश) पर बढ़ चढ़ कर फख्र (गर्व) किया करते, हर एक कबीला दूसरे कबीलों को जलील व हक़ीर (तुच्छ) समझा करता और यही बात अधिकाँश दुश्मनी, नफरत, लड़ाई का सबब बन जाती।

खानदानी रूसूम की हुकूमत दिल व दिमाग पर कानून और मजहब से बढ़ कर हुकमरां (शासक) थी, रूसूम के मुकाबिलो में आज़ादि–ए–राए कम थी।

अपने दुश्मनों को नेस्त व नाबूद करने के लिए अपने सीमावर्ती कौमों से साज बाज करते, फारस, रूमा, हबश को अपने ही मुल्क पर चढ़ा लेने पर होशयारी से से काम लेते।(1)

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरब प्रायद्वीप के केन्द्र मक्का मुकर्रमा में क्यों मबऊस हुए।

अरब अपने साधारण जीवन में वृद्धि विवेक और अनुभव की दृष्टि से किसी से कम न थे, लेकिन शिक्षा न होने की वजह से उन बातों से अज्ञान थे जो विद्या व शिक्षा द्वारा प्राप्त होती हैं, वह अपने विस्तृत और बनजर क्षेत्र में महसूर (घिरे हुवें) रहते हुवे अपने अनुभव और निरक्षण से प्राप्त किये हुवे ज्ञान से काम चलाते, उनपर किसी सभ्यता और नजरये की छाप नहीं थी, बहरहाल अल्लाह तआला की मर्जी और हिकमत का फैसला था कि मानवता की मुक्ति एवं मार्ग–दर्शन का यह सूरज जिस से समस्त संसार में रोशनी फैली, अरब प्रायद्वीप के क्षितिज से उदय हो जो सभ्यता और विद्या की दृष्टि से दुनिया का सबसे अन्धकार क्षेत्र था और जिसको उत्तम और उज्जवल पैगामे जिन्दगी की सबसे ज्यादा ज़रूरत थी। अरब अपने लिये और प्राकृतिक मिजाज पक्के और मज़बूत इरादे की वजा से अल्लाह की ओर से हिदायत (सत्य मार्ग) मिलने पर कौमों और इन्सानों के नेतृत्व के मनसब पर नियुक्त कर दिये गये।

अल्लाह तआला ने इस महान और बड़े काम के लिये अरबों का चयन इसलिये किया और उनको सारी दुनिया में इसके प्रचार व प्रसार का जिम्मेदार बनाया कि उनके दिलों की पाटी (तख़्ती) बिल्कुल साफ थी उस पे पहले से कुछ न था, जिनको मिटाना कठिन होता, अपेक्षाकृत रुमियों, ईरानियों या हिन्दुस्तानियों के जिनको अपने विकास कला, कौशल, सभ्यता व संस्कृति तथा दर्शनशास्त्र पर बड़ा गर्व था और इसके कारण उनके अन्दर कुछ ऐसी मनोवेज्ञानिक गुत्थियाँ तथा मानसिक उलझने पैदा हो गीई थीं, जिनका दूर होना आसान न था। अरबो के मन मास्तिष्क की सादा तख्तियाँ केवल उन मामूली और हल्के फुलके लेखों से परिचित थीं। जिनको उनकी आज्ञानता, निरक्षरता तथा बदवी जीवन ने उनमें लिख दिया था और जिनका धोना व मिटाना और उनके स्थान पर नया लेख लिखना बहुत आसान था। वर्तमान ज्ञान की शब्दावली में वह "सहज अज्ञानता" का शिकार थे और यह वह गलती है जिसका निष्कासन हो सकता है। दूसरी सभ्य विकसित कौमें जो बनावटी सभ्यता की भूलभुलैये में ग्रसित थी, उनका इलाज और उसे मिटाकर नये अक्षर लिखने का काम हमेशा अत्यनत कठिन होता।

यह अरब अपने मूल स्वभाव पर थे, मजबूत और दृढ़ संकल्प के मालिक थे, अगर हक़ बात (सत्य) उनकी समझ में न आती तो वह उसके विरूद्ध तलवार तक उठाने में कोई संकोच न करते और हक़ खुलकर सामने आ जाता तो वह उससे जी जान से अधिक महब्बत करते उसको गले से लगाते तथा उसके लिये जान तक देने में सोच विचार न करते।(1)

सभ्यता व संस्कृति और भोग विलास सब आराम तलबी की पैदा की हुई हैं उन तमाम बीमारियों और खराबियों से अरब सुरक्षित थे, इन

(1) रहमतुल लिलआलमीन–लेखक काजी सुलैमान मनसूर पूरी 3/63

(1) नबी रहमत : पृष्ठ 59–60

बीमारियों का इलाज बड़ा कठिन होता है और वह ईमान व अकीदा की राह में हमेशा रूकावट डालती है और प्रायः आदमी के पैरों में बेड़ियाँ डाल देती हैं।

अरब वासियों के अन्दर सच्चाई भी थी, ईमानदारी भी और बहादुरी भी, उनकी प्रवृत्ति दोहरी नीति व षडयन्त्र को पसन्द न करती उनमें वह सभी गुण थे जो दुनिया में कोई महान कार्य करने वाली कौम के लिये आवश्यक होती है, विशेषकर उस समय जब लड़ाइयों का युग हो और बहादुरी का आम चलन हो। अरब जी जान से लड़ने वाले, घोड़े की पीठ पर अधिक समय बिताने वाले, सुदृढ़, सुरक्षात्मक शकित और सहन शीलता के मालिक, सरलजीवन के आदी, घुड़सवारी और युद्ध कला के रसिया थे।

वह धुन के पक्के इरादे के सच्चे थे, काम में उन की लगन और हक़ के सामने नतमस्तक हो जाने का पता उस वाकिये से भी मिलता है जो इस्लामी फौज के विख्यात सेनापति उकबा बिन नाफे (रजि0) ने कहा था, जब उनकी विजय की राह में अटलांटिक महासागर के कारण रूकावट पैदा हुई तो उन्होंने कहा "ख़ुदाया यह महासागर रास्ते में है अन्यथा जी चाहता है कि बराबर आगे बढ़ता जाऊँ और जल थल में तेरे नाम का डंका बजा दूँ।[1]

❑❑

(1) नबी रहमत पृष्ठ : 62–63

नअते नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मौ0 मु0 सानी हसनी (रह0)

नबी के इश्क़ में मुज़मर, सुकूने दिल का सामाँ है।
महब्बत उन से करना, जानो दिल से ऐन ईमाँ है।

वही हैं रहमते आलम, वही हैं मुहसिने आलम
तसद्दुक़ उन पे दिल मेरा, फ़िदा उन पर मेरी जाँ है।

मुहम्मद नाम है उन का दुरुद उन पर सलाम उन पर
उन्हीं की ज़ाते आली, मेरे जानो दिल की सुल्ताँ है।

वो महबूबे ख़ुदा हैं और इमामुल अंबिया है वो
उन्हीं का सारे आलम पर करम है और एहसाँ है।

वो मोमिन है जिसे ईमान हो उन की रिसालत पर
महब्बत उन से जिस को है, वही अस्लन मुसलमाँ है।

उन्हीं की ज़ाते पाकीज़ा है फ़ख्रे नौअे इन्सानी
उन्हीं की ज़ाते आली, शाहे दीं ख़त्मे रसूलाँ है।

उन्हीं की ख़ाके पाए पाक का हर ज़र्र–ए–ताबाँ
बिला शक नाज़िशे दुर्रे यमन लअ़ले बदख़शाँ है।

उन्हीं की ज़ुल्फ़ की ख़ुशबू पे है मुशके खुतन कुर्बा
ज़बीने पाको रौशन पर तसद्दुक माहे ताबाँ है।

उन्हीं के प्यारे दन्दाँ से, मिला है आब मोती को
जमालो हुस्न गौहर का, फ़िदाए हुस्ने दन्दाँ है।

तबस्सुम से उन्हीं के गुंच–वो–गुल मुसकुराते हैं
उन्हीं का रूए अनवर, मतल–अे–मेहरे दरख़शाँ है।

जो उनके ज़िक्र से मअ़मूर है, वो दिल है पाकिज़ा
मुबारक है ज़बाँ जो मद्ह में उन की गुलफ़शाँ है।

ज़बाँ गुस्ताख़ हो जिस शख़्स की भी शाने आली में
वो अपने दौर का बू जहल है बूलहब व हामाँ है।

फिदा उन पर करे जो दिल वही है साहिबे ईमाँ
उन्हें जो दिल न दे, वो दुशमने दीं दुशमने जाँ है।

मुझे महबूब है हर फ़र्द, उस दरबारे आलीका
मेरी आखों का तारा है, जो उन के दर का दरबाँ है।

❑❑

किस्त–4

पति पत्नी के पारस्परिक कर्तव्य

अल्लामा सय्यिद सुलैमान नदवी

अनुवाद- मु0 नसीर खाँ

नबूवत के इन दो मुअजिजाना शब्दो में क्या कुछ नहीं कह दिया गया है– मर्द को किस औरत के मारने का इखतियार दिया गया है– कुर्आने पाक में एक आयत है जिसमें मर्द को इखतियार दिया गया है कि कुछ हालतों में वह औरत को मार पीट भी सकता है–

तर्जमा : और जिन बीवियों के "नुशूज़" का तुमको डर हो तो उनको समझाओ और उनको अपने बिस्तर से दूर रखो और उनको मारो तो अगर वह तुम्हारा कहना मान लें तो फिर उनपर राहें मत तलाश करो।

लुगत में 'नुशूज' के माने "उठ जाना" के हैं और औरत को हक़ में उसके जो इसतिलाही माने हैं वह मुफस्सिर इब्ने जरीर तबरी के अलफाज में हस्बजेल है।

तर्जमा : और इसके माने यह हैं कि जब तुम इन औरतों की वह हालत देखो जिससे तुम को उनके नुशूज का डर हो, यानी उधर देखना जिधर उनको देखना नहीं चाहिये और वह आयें और निकल जायें और तुमको उनकी बाबत शक हो जाये।

तर्जमा : मुहम्मद बिन कअब कर्जी का कौल है कि जब मर्द देखे कि औरत घर से बाहर आने जाने में उसके हक़ में गल्ती कर रही है, तो उससे जबान से कहे कि मैंने तुझसे यह हरकत देखी तू अब तो बाज आजा।

फिक़ह की किताबों में है– नुशूज वाली औरत वह है जो अपने शौहर के घर से बाहर निकल जाये और अपने आप को उसके सिपुर्द न होने दे, गर्ज़ यह कि नाशिज़ा औरत वह है जिसमें बदअख़लाक़ी की बाज़ मशकूक निशानियां पाई जायें कुछ मुफस्सिरों ने उसको और वुसअत दी है और बताया है कि नाशिजा वह औरत है जो अपने शौहर पर बलन्दी चाहे उसका हुक्म न माने उससे बेरूखी करे और उस से नफरत रखे, मेरे विचार में यह दोनों तफसीरें (विस्तार) दुरुस्त हैं और वास्तव में पूरी आयत पढ़ने से नुशूज़ के माने आप खुल जाते है। आयत मज़कूर पूरी यह है :–

तर्जुमा : मर्द औरतों के निगरां हैं (एक) इसलिये कि अल्लाह ने एक को एक पर बड़ाई दी है। और (दूसरे) इसलिये कि मर्द अपना माल (उन पर) खर्च करते हैं तो नेक बीवियाँ फरमाँ बरदार होती हैं। और (शौहर के) पीठ पीछे (शौहर के घर बार और इज़्ज़त व आबरू की हिफाज़त करतीं हैं कि अल्लाह ने इन औरतों की हिफाज़त की है और जिनके नशूज का तुमको डर हो तो उनको समझाओ अैर उनको सोने में अलग कर दो और उनको मारो तो अगर वह तुम्हारा कहा मान लें तो फिर उनपर रास्ता तलाश न करो।

इस पवित्र आयत में मर्द के बड़कपन की जो दो बातें बयान की हैं उनके प्रणाम पर यह कहा है कि नेक बीवियाँ वह हैं जो अपने शौहरों की फरमा बरदार हैं और उनके पीठ पीछे उनके घर बार और इज़्ज़त व आबरु की सुरक्षा करती हैं। उसके बाद यह है कि अब जिस औरत से तुम्हें नुशूज का डर हो तो उसको पहले समझाओं न माने तो अकेले में उससे दूर रहो या उससे बात करना छोड़ दे इस पर भी न माने तो थोड़ा मारो अब भी अगर कहना मान ले तो फिर उसके सताने या तलाक़ वगैरा देने के लिये हीला और बहाना मत ढूंढो। ऊपर में बता चुका हूँ कि मर्दों को औरतों की निगरानी और देख भाल का हक़ हासलि है फिर यह भी कहा जा चुका है कि नेक बीवियाँ वह हैं जो शौहरों की फरमांबरदार हैं, और शौहरों के पीछे उनकी हर चीज़, माल व दौलत और इज़्ज़त व आबरु की हिफाज़त करती हैं और उसके बाद यह है कि अगर तुम्हें औरत के नुशूज का डर हो तो यह करो। इससे मालूम हुआ कि औरत का नुशूज यह है कि उसके जो दो फर्ज पहले बताये गये हैं यानी शौहर की फरमाँबरदारी, और शौहर के पीछे उसके घर बार और इज़्ज़त व आबरू

की हिफाज़त जो औरत इन दोनों को या उनमें से किसी एक फर्ज़ को भी अदा नहीं करती वही नाशिजा है और ऐसी ही औरत की तमबीह की इजाज़त दी गई है।

शौहर की इज़्ज़त व आबरु की हिफाज़त के अलफाज से जिस तरफ इशारा है उसकी तफसील अहादीस में मौजूद हैं आपने फरमाया, सबसे बेहतर औरत वह है कि जब मर्द उसको देखे तो खुश हो जावे और जब कोई हुक्म दे तो वह मान ले और जब शौहर घर पर मोजूद न हो तो वह अपनी जान (इफ्फत व इसमत) और उसके माल की हिफाज़त करे।

हिज्जतुल विदा के खुतबा में औरतों के अधिकार के संबंध में आँ हज़रत (सल्ल0) के जो दो बोल हैं उनमें नुशूज के अर्थ की पूरी तफसील है, सही मुस्लिम में हैं –

तर्जुमा : औरतों के बारे में खुदा से डरो कि वह तुम्हारे अधिकार में है तुम्हारा उन पर यह अधिकार है कि वह तुम्हारे बिस्तर को किसी से अपवित्र न करें जिसको तुम नापसन्द करते हो अगर वह ऐसा करें तो केवल उनको इतना मारो कि तकलीफ अधिक न हो।

इब्न माजा में यह अलफाज़ हैं।

तर्जुमाः औरतों के साथ नेक व्यवहार करने के सम्बन्ध में मेरी वसीअत को स्वीकार करो वह तुम्हारे अधिकार में हैं तुम को इसके सिवा इन पर कोई अधिकार नहीं है। मगर यह कि वह कोई खुली बेहयाई का काम करे अगर वह ऐसा करे तो उनको बिस्तर पर अकेला कर दो और उनको उतना ही मारो जो कष्टदायक न हो तो अगर वह तुम्हारा कहना मान लें तो उन पर कोई रास्ता न ढूंढो।

शौहर के बिस्तर को रौंदवाने का मतलब है कि ऐसे लोग उसके घर में आने जाने न पायें जिनका आना जाना शौहर को नागवार या शक मालूम हो और खुली बेहयाई से जिधर संकेत है वह छुपा नहीं लेकिन कुछ ने इसमें भी तफसील की है, यानी औरत की नाफरमानी और बदजुबानी और मुशतबह चाल चलन सबको फाहिशतुम्मुबय्यना की तफसीर में दाख़िल किया है।

आखिरी दर्जे पर औरत की तम्बीह की यह इजाजत ख़ास हालात में है और शरअ़ की तसरीह है कि – ऐसी मार हो जिससे औरत के किसी भाग को हानि न पहुँचे बलकि यहाँ तक है कि दातवन (मिसवाक) वगैरा से मारना है।

जिससे सिवाए चेतावनी के कोई चोट न आये वरना औरतों को आम तौर से मारना इस्लामी परम्परा के विरोध में है यह ज़माना जाहिलियत का दस्तूर (चलन) था जिसका इस्लाम ने सुधार किया है। हज़रत यास बिन अब्दुल्लाह (रजि0) कहते हैं कि आँ हज़रत (सल्ल0) ने एक दफा हुक्म दिया कि खुदा की बन्दियों (अपनी बीवियों को मारा न करो तो हज़रत उमर ने आकर अर्ज की या रसूलुल्लाह बीवियाँ अपने शौहरो पर दिलावर हो गई तो आप (सल्ल0) ने मारने की रुखसत अता की नतीजा यह हुआ कि बहुत सी औरतें अहले बैत नबवी के सामने शौहरों की शिकायतें लेकर आईं यह देखकर आपने फरमाया–

आल मुहम्मद (सल्ल0) के आगे पीछे बहुत सी औरतें चक्कर काटती रहीं जो अपने शौहरों की शिकायतें लेकर आई थीं यह (बीवियों से ऐसी बद सुलूकी करने वाले) तुम में से अच्छे लोग नहीं।

एक सहाबिया ने अपने निकाह के मुतअल्लिक आप से मशवारा लिया और एक शख्स के पैगाम का जिक्र किया। आप (सल्ल0) ने फरमाया वह अपना डंडा अपने कन्धे से नीचे नहीं उतारता यानी वह मार पीट किया करता है और जरा जरा सी बात पर खफा होता रहता है। इससे मालूम हुआ कि आपने उसके इस फेल (काम) को ना पसन्द फरमाया।

एक सहाबी ने आकर शिकायत की कि या रसूलुल्लाह मेरी बीवी बदजुबान है, फरमाया, तलाक दे दो अर्ज की उससे मेरी औलाद हैं और एक समय से मेरे साथ है फरमाया तो उसको समझाया करो उसमें सलाहियत होगी तो उस को कबूल करेगी लेकिन अपनी बीवी को लोड़ीं की तरह मारा न करो।

एक दूसरे समय पर फरमाया, कोई अपनी बीवी को गुलाम की तरह कोड़े न मारा करे, यह कोई अच्छी बात नहीं कि एक वक्त कोड़े मारे और दूसरे वक्त उस से हम विस्तर हों।

❑❑

इस्लामी सभ्यता का स्तर

मौ0 सय्यद मुहम्मदुल हसनी रह0

सभ्यता से संबधित लोगों के विभिन्न विचार व दृष्टिकोण हैं और इसकी अनेक व्याख्याएं की जाती रही है। इसलिये जब हम इस्लाम व सभ्यता की चर्चा करें तो हमें सोचना चाहिए कि इस्लामिक सभ्यता का स्तर क्या है?

सभ्यता का हाल तो यह है कि एक चीज एक खानदान में कलंकित है, दूसरे खानदान में श्रेष्ठ है, तो तीसरे खानदान में जाएज है। खानादानों कबीलों शहरों और देशों में खोजने से हर स्तर पर ऐसी चीज मिल जाएगी जिनमें बहुत अधिक भिन्नताएं व विरोध का पता चलता हो। पूरब में सभ्यता का स्तर दूसरा, पश्चिम में दूसरा, सुन्दरता के स्तर का भी यही हाल है। अफ्रीका में हब्शी, मंगोलिया में चीनी, जापान और यूरोप में सफेदपोश लोग सब सुन्दरता से संबधित अलग–अलग दृष्टिकोण रखते है। ऐसी स्थिति में यह भरोसा कैसे किया जा सकता है कि सभ्यता एक अकेली चीज है जो हर जगह एक आदर्श व स्तर रखती है।

इस सिलसिले में एक आधारभूत बात दिमाग में यह बैठाने की आवश्यकता है कि सभ्यता एक बढ़ने वाली चीज़ है और इसका सारा मुल्य उद्देश्य से संबंधित है। उदाहरण के लिये अगर इस्लाम के नजदीक कोई व्यक्ति उपभोगी, दुश्चरित्र, बुरी अन्तरात्मा व नियमविरोधी है तो वह अपनी सारी बाह्य सभ्यता और प्रसन्नचित होने और अपनी सारे ज्ञान व सामाजिक तौर तरीकों के बावजूद गैर मुहज्जब (सभ्यता के विपरीत) है।

यह एक ऐसा वास्तविक नियम है जिसको सामने रखकर हम इस्लाम के सांस्कृतिक आदर्श को अच्छी तरह समझ सकते है।

इसी बात को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि इस्लाम में सभ्यता की शुरूआत अन्तरात्मा व मन से होती है इस्लाम में इसका आधार आख़िरत पर है। गैर इस्लामी दृष्टिकोण में इसका आधार दुनिया पर है और (अल्लाह के निकट सबसे सम्मानित वह है जो तुम में सबसे ज्यादा अल्लाह से डरने वाला है।) के यही मायने है।

इस बात को स्पष्ट करने के लिये यहाँ दो मिसालें प्रस्तुत की जाती है। दुआ कुनूत में हर व्यक्ति रोज पढ़ता है कि (जो खुलकर दुराचार व बदअमली में लिप्त है हम उसको छोड़ते हैं, और उससे बिल्कुल अलग होते हैं।)

नई भौतिकवादी सभ्यता के विरोध में यह वो बिन्दु व शुरुआत है जो हर मोड़ और हर समस्या पर नजर आयेगी। वर्तमान समय की सभ्यता यह कहती है दुराचार व बदअमली इन्सान का निजी मामला है। किसी को इससे सरोकार नहीं होना चाहिये और इसलिये ऐसे व्यक्तियों से बिना झिझक संबंध स्थापित किये जा सकते हैं। लेकिन इस्लाम का दृष्टिकोण यह है कि अगर शासन के विद्रोही से सम्बन्ध जुर्म है तो ख़ुदा के विद्रोही से सम्बन्ध किस तरह ठीक है। आज की दुनिया इसको अलगाव पसन्दी या प्रतिक्रिया वाद कहती है और संकुचित दृष्टिकोण से इसकी व्याख्या करेगी। लेकिन इस्लाम का संस्कृतिक सतर नये भौतिकवादी विचार से एकदम भिन्न है। इसलिये कोई ऐसा जंक्शन इसके रास्ते में नहीं आता जहाँ दोनो एक जगह नजर आयें और एक हो जाएं। इसी तरह इस्लामी सभ्यता का स्तर यह है यानि इन महफिलों में जहाँ खुदा और रसूल (सल्ल0) के अपमान की सम्भावना हो हमें बिल्कुल न बैठना चाहिये और अगर ऐसी चर्चा हो तो महफिल के नियमों की परवाह

किये बगैर वहाँ से उठ कर चले जाना चाहिये।

स्वतन्त्र विचारों के नाम पर इच्छापूर्ति को निमन्त्रण देने वालों के निकट यह अन्धकारमय विचार, पक्षपात या भावनाओं की बात होगी। लेकिन इस्लाम में यह सभ्यता के बिल्कुल मुताबिक बल्कि सभ्यता ही होगी और इस महफिल में बैठने वाले इसके निकट बहुत ही असभ्य इन्सान कहलाएंगे।

ये दो सरसरी मिसालें हैं वरना गौर किया जाए तो इस्लाम की पूरी सामाजिक व्यवस्था इस प्रकार के नमूनों और मिसालों से भरी पड़ी हुई है।

खाने के बरतन साफ करना, उंगलियाँ साफ करना, मिसवाक करना ये वो बातें है जो नये पश्चिमी समाज के लिये बर्दाश्त करने के लायक नहीं है। लेकिन इस्लाम का दृष्टिकोण इस अध्याय में बिल्कुल स्पष्ट है इसके निकट मानवीय सभ्यता का उद्गम ख़ुदा और रसूल (सल्ल0) है न कि हमारे बनाये हुए दृष्टिकोण।

वर्तमान युग में स्वार्थ का नाम सभ्यता है इस्लाम में त्याग व निस्वार्थ का, वर्तमान युग में निजी हितों का नाम सभ्यता है, इस्लाम में निजी त्याग का। यह वो आधारभूत भिन्नताएं है जो इस्लामिक सभ्यता के स्तर को वर्तमान व भूत्काल के सभी स्वयं निर्मित स्तरों, बल्कि सही शब्दों में कल्पनाओं से बिल्कुल अलग करता है। इसलिये अगर कोई इस्लाम के अन्तर्गत सभ्यता की बार–बार चर्चा करता है तो इस को अच्छी तरह सोच लेना चाहिये कि इसके अनुसार सभ्यता का मतलब क्या है। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह अपनी बेखबरी में सभ्यता के इसी चले हुए बाजारी मतलब को समझ रहा है। जिस का ध्वजवाहक पश्चिम है। अगर ऐसा है तो वह इस्लाम की तरफ एक ऐसी चीज संबंधित कर रहा है जिससे इस्लाम का कोई संबंध नहीं है। इस्लामी संस्कृति व सभ्यता का जलवा देखने के लिये हमें हज़रत उम्र (रजि0) के झोपड़े की तरफ देखने की आवश्यकता है। दमिश्क और बगदाद के दरबारों और गरनाता व शबीलिया के महलों की तरफ नहीं इस की व्याख्या के लिये इब्न रुश्द व फाराबी की ओर झुकने की ज़रूरत नहीं इसके लिये सहाबा व ताबईन और उलमा व औलिया–ए–उम्मत के पवित्र इस्लामी जीवन के अमली नमूने पर्याप्त है।

इस्लामी सभ्यता शिल्पकला, चित्रकला और निर्माणी हुनर के नाजुक उतार चढ़ाव में नहीं मिलेगी। इसकी खोज हक़वालों के चरित्र, सुन्नत व अजीमत, सेवा व त्याग के जिन्दा नमूनों में करनी चाहिये, जिनको हम अब्दुल कादिर जीलानी रह0 शेख निजामुद्दीन औलिया रह0, मुजद्दिद अल्फे सानी रह0 और सय्यद अहमद शहीद रह0 जैसे नामों से याद करते है।

निर्माणी हुनर से सम्बन्धित कुर्आन अपना स्तर बताता है कि (क्या तुम हर ऊँचे स्थान पर एक याद के तौर पर इमारत बनाते हो, जिस को केवल फुजूल, बिना आवश्यकता बनाते हो और बड़े–बड़े महल बनाते हो, जैसे दुनिया में तुमको हमेशा रहना है और जब किसी से पूछताछ करने लगते हो तो बिल्कुल अत्याचारी बनकर पूछताछ करते हो।)

साहित्य व शायरी का भी साथ तब तक है जब वह इस लक्ष्य से संबंधित हो और इसको ताकत देती हो। ये बढ़ोत्तरी जिस समय अलग होगी, रूह इसके जिसम से निकल जाएगी और इस्लामी सभ्यता की दृष्टि में इसकी हैसियत वह होगी जिसको कुर्आन मजीद में इस प्रकार ब्यान किया गया है : (और शायरों की राह तो बेराह लोग चला करते है ऐ सुनने वालों क्या तुम को पता नहीं कि शायर लोग ख्याली विषयों के हर मैदान में हैरान फिरा करते है और जबान से वह बातें कहते हैं जो वह करते नहीं हाँ मगर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये।)

इस्लामी इतिहास में सुल्तानों ने नाच गाने और संगीत कला व अनावश्यक निर्माण की जो संरक्षता की है,

शेष पृष्ठ 26

अल्लाह की निशानियां

- अयाज़ अहमद फारूक़ी (मदीना)

आजके वैज्ञानिक युग में दिन प्रतिदिन होने वाले वैज्ञानिक अविष्कारों को देखकर मनुष्य आश्चर्य चकित रह जाता है। और इन वैज्ञानिक चमत्कारात्मक अविष्कारों का मनुष्य सोच–विचार पर यह प्रभाव पड़ा है कि वह विज्ञान कोही सच्चाई की कसौटी मानने लगा है।

यदि कोई यह कहे कि कंकर पत्थर और लकड़ी आदि को कूटपीस कर मिला दिया जाए तो पेट्रोल बन जाएगा, तो इस प्रकार की बातों को लोग हंसी मजाक या पागल पन समझेंगे। क्योंकि वास्तव में कोई व्यक्ति ऐसा अविष्कार करनेकी शक्ति नहीं रखता किन्तु इसी प्रकार कि और इससे भी अधिक चमत्कारी घटनाएं इस संसार में प्रति क्षण होती रहती है प्रकृति की भौतिकी और रसायनिकी प्रति क्षण इस प्रकार की असख्य चमत्कारिक घटनाएं दिखाती रहती है जो मानव के लिये अबूझी चमत्कारिक घटना के रूप में विधमान रहती हैं। उदाहरण के लिये आक्सीजन और हाईड्रोजन दो गैसे हैं प्रकृति इनको एक विशेष अनुपात में मिलाती है तो यह मिश्रण एक तर जल का रूप धारण कर लेता है। कार्बन और हाईड्रोजन एक विशेष परिस्थिति आपस में मिलकर तरल तेल जैसी अमूल्य वस्तु का निर्माण करते हैं।

उपरोक्त असंख्य चमत्कार संसार में हर पल दिखाई देते हैं। मनुष्य इसको देखकर आश्चर्य चकित होता है, वह देखता है कि इन वस्तुओं में न तो स्वयं को चमत्कारिक अस्तित्व में लाने की शक्ति है और ना हीं मनुष्य अपने आप में ऐसा करने की शक्ति पाता है। कि वह यह सब कुछ कर सके जो प्राकृति में हो रहा है।

फिर प्रश्न उठता है कि यह सब कैसे हो रहा है? इस प्रश्न का उत्तर लोग यह देते है कि यह सब ईश्वर का अंश है। यह स्वयं ईश्वर है जो असंख्य रूपों में अपने आप को प्रकट कर रहा है।

किन्तु कुर्आन इस प्रकार के प्रत्येक उत्तर को नकारता है और इसको बहुत बड़ी गुमराही (भटकाव) कहता है। कुर्आन के अनुसार इस प्रकार के चमत्कार ईश्वर का अंश नहीं अपितु ईश्वर की आज्ञा है। अल्लाह ने अपनी कुदरत (क्षमता) से ऐसा किया है न कि स्वयं इसके रूप में अपने को प्रकट किया है। क्योंकि अल्लाह कहता है हो जा तो हो जाता है। इसलिये यह केवल हुक्म (आज्ञा) मात्र है।

एक साधारण व्यक्ति इस बात को क्यों नहीं समझ पाता इसको एक उदाहरण से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिये एक व्यक्ति जो अच्छा इन्जीनियर है जो मशीनें बनाने और उसको परखने का गुण रखता है वह इतना अधिक अनुभवी है कि वह किसी मशीन को देखते ही बता सकता है कि यह मशीन जापान की बनी हुई या जर्मनी की यही स्थिति संसार की हर वस्तु की है क्यों कि हमारे सामने जो संसार है यहाँ असख्य प्रकृतिक मशीन लगातार बिना रूके हुए अपना कार्य कर रही है। यद्यपि इन प्रकृतिक मशीनों पर Made in ..... की कोई मुहर या ठप्पा नहीं है किन्तु अपनी असाधारण बनावट के कारण अपने निर्माण करता या स्वयं परिचय हैं। और हम जानते है कि कोई कृति स्वयं कर्ता का परिचय होती है। किन्तु जिस प्रकार एक कुशल इन्जीनियर ही किसी मशीन को देखकर बता सकता है कि यह जापान की बनी है या जर्मनी की उसी प्रकार एक कुशल और बुद्धिमान व्यक्ति ही संसार में होने वाले इन चमत्कारों को देखकर इन के निर्माण करता चमत्कारी परमेश्वर को पहचान सकता है। और फिर अल्लाह इन चमत्कारों के माध्यम से अपना परिचय देता है क्यों जैसा कि कुर्आन की सूरह यूनुस में अल्लाह कहता है हम

निशानियाँ खोल कर ब्यान करते हैं उन लोगों के लिये जो गौर (मनन चिन्तन(करते हैं।

एक स्थान पर और कुर्आन की सूरह अलबकरा आयत 164 में अल्लाह कहता है– बेशक (निसन्देह) आकाश और पृथ्वी की बनावट और रात और दिन के आने जोने और उन नावों में जो व्यक्तियों के काम आने वाली वस्तुओ को लेकर समुद्र में चलती हैं, और उस जल में जिसको अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसने मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दगी दी, और उसने पृथ्वी पर हर प्रकार के जीव जन्तु फैलाये और ज़मीन के बीच हुक्म के ताबेअ (आज्ञा से बंधे हुए) हैं, उन लोगों के लिये निशानियाँ हैं। जो बुद्धि और ज्ञान से काम लेते हैं।

संसार में पाई जाने वाली किसी वस्तु पर शब्दों में यह नहीं लिखा हुआ है कि इसका निर्माण अल्लाह ने किया है किन्तु मूक भाषा में हर वस्तु बता रही है कि उसे किसने बनाया है किन्तु इसको पढ़ने और देखने के लिये एक विशेष दृष्टि की आवश्यकता है। ज्ञानी ही देखकर पुकार उठेगा की इसे अल्लाह ने बनाया है क्यों दूसरा कोई बनाही नही सकता।

अन्त में एक बात कि "नसीहत वही पकडते हैं जो बुद्धि और ज्ञान विवेक वाले हैं।"

(कुर्आन सूरह अलजुमर)

❑❑

अर्ज अहकर बराय हिफाज़ते नज़र

डॉ0 अकरम खाँ

बद निगाही की मजर्रत (नुकसान देने वाली चीज़) इस कदर हैं कि बसा औकात इन से दुनिया और दीन दोनो तबाह व बरबाद हो जाते हैं।

आज कल इस मरज़े रुहानी में मुबतला होने के अस्बाब मालूम हुए कि इस के बाज मंजर्रात और इससे बचने की तदबीर (इलाज) मुख्तसर तौर पर तहरीर (लिख कर बताना) कर दी जायें ताके इस के नुकसानात से हिफाज़त की जा सकें। इसलिये नीचे लिखी हुई बातों का एहतमाम करने से नज़र की हिफाज़त ब सुहूलियत हो सकेगी।

1. जिस वक्त मस्तूरात (औरतो का) का गुजर हो सुहूलियात से निगाह नीची रखना चाहे कितना ही नफ्स का तक़ाज़ा देखने का हो जैसा कि ऊस पर आरिफ हिन्दी ख्वाजा अजीजुल हसन साहब मज्जूव ने इस तौर पर तम्बीह फरमाई है।

दीन का देख है खतर
उठने न पाये हाँ नज़र
कूए जानां में तू अगर जावे
तो सर झुका कर जाये

2. अगर निगाह उठ जावे और किसी पर पड़ जावे तो फौरन निगाह को नीचे कर लेना ख्वाह कितनी ही गिरानी हो ख्वाह दम निकल जाने का अन्देशह हो।

3. यह सोचना कि निगाह के हिफाज़त न करने से दुनिया में जिल्लत का अन्देशः है। ताअ़त (फर्माबर्दारी) का नुर सल्ब हो जाता है आखिरत की तबाही यकीनी है।

4. बद निगाही पर कम अजकम चार रकअत नफ्ल पढ़े और कुछ न कुछ हस्बे गुन्जाईश ख़ैरात और कसरत से इस्तिग़फार करना।

5. यह सोचना कि बद निगाही की जुल्मत से कल्ब सत्यानास हो जाता है। और यह जुल्मत बहुत देर से दूर होती है। यहाँ तक कि जब तक बराबर निगाह की हिफाज़त न की जाये उस वक्त तक कल्ब साफ नहीं होग।

6. यह सोचना कि बदनिगाही से मैलान, मैलान से महब्बत और महब्बत से इश्क पैदा हो जाता है। और नाजाइज इश्क से दुनिया और आखिरत तबाह हो जाती है।

7. यह सोचना कि बदनिगाही से ताअ़ात जिक्र, शुगूल से रफता–रफता रगबत कम हो जाती है। यहाँ तक कि जिक्र छोड़ने की नौबत आ जाती है। फिर नफ़रत पैदा होने लगती है।

"अल्लाह तआला हमे और आप सभी को इन सब बातों पर अमल करने की तौफीक अता फरमायें। आमीन!"

❑❑

इस्लामी इन्साफ देखकर यहूदी मुसलमान हो गया

इदारा

सय्यदना हज़रत अली की एक दिरअ (जंगी ढाल) गुम हो गई जो कीमती होने के अलावा उन्हे बहुत पसंद थी। कुछ दिनों के बाद कूफा के बाजार में एक यहूदी उसको फरोख्त कर रहा था। सय्यदना अली ने जब उसे देखा तो पहचान गये और उस यहूदी से कहा यह दिरअ तो मेरी है। फुलाँ दिन फुलाँ मकाम पर मेरी ऊंटनी से गिर गई थी फिर नहीं मिली। यहूदी ने कहा अमीरुल मोमिनिन! दिरअ तो मेरी है और अरसे से मेरे कब्ज़े में है।

सय्यदना हज़रत अली ने फरमाया मैंने यह दिरअ न किसी को फरोख़्त की है न तुहफा दिया है फिर तेरे क़ब्ज़ा में क्यों कर आई?

यहूदी मुतमइन नहीं हुआ और अपनी मिलकियत ही का दावा करता रहा आखिर उसने कहा अमीरुल मोमिनीन अगर आप दावा में सच्चे हो तो अदालत से रुजू कीजिये। यहूदी का यह खियाल था कि काज़ी शुरैह गैर मुसलिमों की रु रिआयत करके मेरी ताईद कर देंगे। सय्यदना हज़रत अली रजी अल्लाहु अनहू राजी हो गये। दोनों काजी शुरैह की ख़िदमत में पहुँचे काजी शुरैह न कहा अमीरुल मोमिनीन आप का क्या दावा है।

सय्यदना हज़रत अली ने फरमाया यह कीमती दिरअ फुलाँ रात फुलाँ मकाम पर गुम हो गई थी। कुछ दिनों बाद मैंने देखा कि बाजार में यह शख्स इसको फरोखत कर रहा है। मैंने इस से कहा कि यह दिरअ तो मेरी है। लेकिन यह मुसलसल इन्कार कर रहा है। जबकी मैंने अपनी दिरअ न किसी को फरोख़्त की न किसी को तुहफा दिया है तो फिर यह दिरअ इसकी मिलकियत में क्यों कर आई। काजी शुरैह ने यहूदी से भी दरयाफ्त किया। उसने यही कहा कि आली जनाब अमीरुल मोमिनीन को झूठा करार नहीं देता अलबत्ता दिरअ मेरी है और अरसा दराज से मेरे कब्जा में है।

काजी शुरैह अमीरुल मोमिनीन की तरफ मुतवज्जा हुये और कहा यकीनन आप सच्चे हैं और यह दिरअ आपकी है हम आप को मुततहिम नहीं करते लेकिन अमीरुल मोमिनीन आप अपने दावा पर गवाह पेश करें जो आप के दावा की तसदीक करें। सय्यदना अली ने एक गुलाम जिसका नाम कंबर था और अपने साहब जादा हज़रत हसन का नाम पेश किय यह दोनों गवाही देंगे।

काजी शुरैह ने कहा अमीरुल मोमिनीन कंबर की शहादत तो कबूल करली जायेगी। लेकिन साहब जादे हसन की गवाही मकबूल नहीं क्यों कि हमारे कानूनी अदालत में बेटे की गवाही बाप के बारे में कबूल नहीं की जाती कोई और गवाह पेश कीजिये।

सुबहान अल्लाह ऐसे शख्स की गवाही कबूल नहीं की जाती जो जन्नती हैं हदीस (.....) हसन और हुसैन जन्नत के नौजवानों के सरदार हैं आपने नहीं सुना।

काजी शुरैह ने कहा क्यों नहीं बेशक मैंने यह इरशाद नबवी सुना है। लेकिन अमीरुल मोमिनीन मैं बेटे की गवाही बाप के हक़ में जायज नहीं समझता लेहाजा दूसरा गवाह पेश कीजिये।

इस मौक़ा पर सय्यदना हज़रत अली अपने मकाबिल यहूदी की तरफ मुतवज्जा हुये और फरमाया ऐ यहूदी मेरी यह दिरअ ले ले। मेरे हाँ दूसरा और कोई गवाह नहीं है।

यहूदी काजी शुरैह का यह इस्लामी किरदार और अमीरुल मोमिनीन का यह अजीम ईसार देख कर झुक गया और ब आवाज बलन्द कहने लगा। मैं गवाही देता हूं कि जिस दीन का यह तकाजा है वह दीन हक़ और सच्चा है। फिर यहूदी ने कलमये शहादत पढ़ा "अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदुअन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह।" और अदालत के कमरे में अपने इस्लाम लाने का ऐलान किया। उसके बाद काजी शुरै ह से कहने लगा

शेष पृष्ठ 26

किस्त 19

हम कैसे पढ़ायें?

शिक्षकों के लिय

– डॉ. सलामत उल्लाह

सामाजिक व्यवस्थाओं से शिक्षण के विषयों का जोड़

डेवी ने जो आधुनिक युग का एक महान अमरीकन विचारक शिकागो में एक स्कूल कायम किया था जिस मे दुकान का काम, खाना पकाना और कपड़ा बुनना बुनियादी व्यस्तताओं की हैसियत रख्ते थे। इन कामों के सिलसिले में बच्चों को तमाम जानकारी जहाँ मौका मिलता है पहुँचाई जाती थीं। इस स्कूल में विषयों को अलग–अलग पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं थी। डेवी के विचार से इस प्रकार बच्चे स्वाभाविक ढंग से ज्ञानार्जन करते हैं और सिर्फ वही बातें सीखते हैं जो उन के व्यवहार में आने वाली हैं।

बुनियादी शिक्षा की संयुक्त विधि

अब हमारे देश में भी इस ओर ध्यान दिया जा रहा है। अतः 1938 में जाकिर हुसैन कमेटी ने एक स्कीम तैयार की जो बुनियादी शिक्षा के नाम से जानी जाती है। इस शिक्षा की आत्मा दस्तकारी है। यह दस्तकारी किसी स्कूल में माहौल की अनुकूलता और शैक्षिक सम्भावनाओं को ध्यान मे रखते हुए चुनी जायेगी। स्कूल के तमाम विषय दस्तकारी (हस्तकला) से जोड़ कर पढ़ाये जायेंगे। इस स्कीम का प्रयोग देश के विभिन्न भागों में किया गया है। यद्यपि इन प्रयोगों को तरह–तरह की प्रशासनिक कठिनाईयों का समाना करना पड़ा है लेकिन परिणाम उत्साहवर्द्धक मालूम होते हैं। हिन्दुस्तानी शैक्षिक संघ की विभिन्न रिपोर्टों से मालूम होता है कि अधिकतर स्कूल जिन में बुनियादी शिक्षा का प्रयोग किया जा रहा है, शिक्षण में जोड़ की प्रस्तावित विधि ठीक ढंग से बरतने की कोशिश कर रहे हैं और उन्हें अपेक्षित परिणाम प्राप्ति में बड़ी हद तक कामयाबी हुई है।

इस विधि की जाँच

"एकजा विषयों" की स्कीमों पर बहस करते हुए एक विशेष खराबी की तरफ इशारा किया गया था कि केन्द्रीय विषयों की खातिर अन्य विषयों की बाकायदा तालमी को कुरबान करना पड़ता है। लेकिन बुनियादी तालीम की स्कीम में दस्तकारी के अलावा जोड़ के दो और केन्द्र सामाजिक वातावरण और भौतिक वातावरण प्रस्तावित कर के इस खराबी को दूर करने की कोशिश की गयी है इस से जोड़ के मामले में बहुत सहूलत हो गयी है। यहाँ टीचर को हर चीज खींच तान कर दस्तकारी से जोड़ने की ज़रूरत नहीं है वह बहुत आसानी से बच्चे के समाजी और भौतिक माहौल यह दोनों माहौल शिक्षण के दृष्टिकोण से अत्यन्त लाभप्रद अवसर प्रदान करते हैं।

बुनियादी तालीम में जोड़ की जो विधि सुझाई गयी है वह वास्तव में इस देश की शिला के पाठ्यक्रम की समस्या का सब से कीमती हल है। स्कूल और समाज के बीच जो खाई पैदा हो गयी है। यह सिर्फ उसी को दूर नहीं करेगा बल्कि स्कूल के पाठ्यक्रम की सारी पुरानी व्यवस्था जिस के नजदीक ज्ञान और प्रयोग दोनों बिल्कुल अलग–अलग और एक दूसरे से न मिलने वाली चीजें हैं बदल जायेगी। ज्ञान और प्रयोग का बनावटी अन्तर मिट जायेंगा। इस में से एक दूसरे का सहयोग करेगा और इसी के साथ–साथ हाथ के काम की महत्ता फिर से स्वीकार की जायेगी जिस से हमारा समाज तरक्की करेगा।

दस्तकारी के साथ जोड़ के रूप

किसी हस्तकला के साथ, जोड़ के दो रूप हो सकते हैं एक तो यह कि काम के दौरान में काई ऐसा मौका पैदा हो कि किसी बात का बताना इतना जरूरी हो जाये कि उसे बताये बिना आगे काम जारी न रखा जा सके। जाहिर है कि इस बात का दस्तकारी से बहुत क़रीबी

जोड़ होगा। मिसाल के तौर पर बागबानी के काम में जब कि बच्चे गमलों में बीज बोना सीख रहे हों तो उनके लिये यह जानना जरूरी है कि गमले की खाद और मिट्टी में क्या अनुपात होना चाहिये, बीज मिट्टी में कितनी गहराई में बोना चाहिये, गमले के पेंदे में सूराख किस लिये रखे जाते हैं, गमला खुली हवा में रखना चाहिये या बन्द कमरे में जहाँ धूप न आती हो, इसमें पानी किस समय देना चाहिये और क्यों आदि। इन बातों की सही जानकारी न होने से काम ठीक नहीं होगा। बागबानी की सक्रिया के दौरान में इन बातों के बताने के मौके सीधे आते हैं अतः बच्चे यह बातें सही अर्थ में जुड़े तरीकों से सीखेंगे।

जोड़ का दूसरा रूप है एक चीज का किसी दूसरी चीज से तअल्लुक पैदा करना, यह जोड़ का पुराना रूप है और आम है। और इसे उस समय भी बरता जा सकता है जब कि शिक्षण का केन्द्र कोई दस्तकारी न हो। अगर एक चीज के पढ़ाने मे किसी दूसरी चीज से मदद ली जाये या एक विचार को स्पष्ट करने के लिये किसी दूसरे विचार से काम लिया जाये तो कह सकते हैं कि इन चीजों या इन दो विचारों में जोड़ पैदा किया गया है। जहाँ दस्तकारी के जरियः तालीम दी जाती है वहाँ भी हम इस प्रकार के जोड़ से सहज ही फायदा उठा सकते हैं। मिसाल के तौर पर एक ऐसी कक्षा में जिस की बुनियाद दस्तकारी कताई है बच्चों को मोहन जोदड़ो के हालात कताई से जोड़ कर बताये जा सकते हैं। बच्चों से कहा जा सकता है कि हमारे देश में कताई और बुनाई का काम हजारों साल से हो रहा है जिस जमाने में दुनिया के क़रीब–क़रीब सभी देशों के लोग जंगली जानवरों की तरह नंगे रहते थे उस समय भी हिन्दुस्तान वाले बहुत अच्छा कपड़ा पहनते थे क्योंकि वह कताई बुनाई का काम बहुत अच्छा जानते थे। इसके बाद मोहन जोदड़ो की सभ्यता के बारे में और दूसरी बाते बताई जा सकती हैं।

जाहिर है कि जोड़ की यह विधि उतनी प्रभावी नहीं है जितनी कि पहली। लेकिन इस के प्रयोग करने में कोई हर्ज नहीं है अगर इस में समझ–बूझ से काम लिया जाये।

बागबानी एक बुनियादी पेशे की हैसियत से

बागबानी में कुछ ऐसी खूबियाँ है कि इसे स्कूल में अपनाना बहुत लाभप्रद साबित होगा। इस में बच्चे काम करते हुए कभी नहीं उकताते, इस में फसल बोने से पहले दूर दृष्टि से काम लेना होता है। कार्य योजना पहले से सोच विचार कर बुवाई होती है। फसल उगने तक ध्यान रखना, धैर्य से काम लेना, आशावान रहना सीखते हैं। फसल काटते समय खुशी होती हैं, मिलजुल कर काम करने की आदत पड़ती है। सामाजी एहसास पैदा होता है।

(जारी.....)

❑❑

अनमोल मोती (सभाषित)

मौ0 राबे हसनी –एम0 हसन अंसारी

"अल्लाह ने हर चीज़ को ऐसा बना दिया है कि वह इताअत (आज्ञापालन) करे, लेकिन इन्सान को इख्तियार दिया और इल्म दिया, इसलिये इन्सान वह कर रहा है जो उसके समझ में आ रहा है। अक़्ल अल्लाह ने दी है कि इससे काम लिया जाये। मगर जो चीज मालूम नहीं है उसमें अक़्ल भी साथ नहीं दे पाती, इसलिये मात्र अक़्ल से काम नहीं हो सकता, इसके लिये सही इल्म और इताअत जरूरी है। उलूम में सबसे पढ़कर कुर्आन व हीदस का इल्म है, रौशनी इसी से मिलेगी।

बैअत असलन तौबः है। गुनाहों से तौबः बहुत जरूरी है, वरना तौबः न करने का खमयाजः (करनी का फल) आख़िरत (परलोक) में भुगतना होगा।

आख़िरत का बड़ा ख़्याल रहे कि आख़िरत में सजा न मिले। इन्सान को अपनी इबादात व कमालात पर कभी गुरूर (अहंकार) नहीं होना चाहिये। उसकी निगाह अल्लाह के फज़ल (बखशिश) पर रहे कि वह पात्र न होने पर भी दे रहा है। जो चीज़ अल्लाह ने दी है उसको अल्लाह की तरफ ही मंसूब (निसबत किया गया) करना चाहिये।

मुसीबतें और परेशानियाँ यूँ ही नहीं आतीं, हमारे आमाल (कर्म) की खराबी के अनुरूप (बक़द्र) आती हैं इस लिये अल्लाह की खुशनूदी वाले आमाल करते रहना चाहिये। और इस की कोशिश में रहना चाहिये कि किस तरह अल्लाह की नाराज़गी से बचा जा सके।"

❑❑

? आपके प्रश्नों के उत्तर ?

मुफ़्ती मु0 ज़फ़र आलम नदवी

प्रश्न : कुछ लोगों का कहना है कि औरत को छूने से वज़ू टूट जाता है। क्या यह सहीह है?

उत्तर : औरत के छूने से वुज़ू नहीं टूटता। हज़रत आइशा (रज़ि0) से रिवायत है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने उन का बोसा लिया हालांकि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) रोज़े से थे और फ़रमाया बोसा से वुज़ू नहीं टूटता और न रोज़ा टूटता है।

(इस्हाक़ बिन राहवैहि, बज़्ज़ार)

प्रश्न : क्या भैंस, भैंसा और पड़वे की क़ुर्बानी नहीं जाइज़ है? जैसा कि कुछ पढ़े लिखे लोगों से ऐसा सुना गया?

उत्तर : अहनाफ के यहाँ भैंस, भैंसा या पड़वे की कुर्बानी जाइज़ है इस को गाय की जिन्स (जाति) से माना गया है। हंबली मसलक की फ़िक़्ह की किताब "मनारुस्सबील भाग 1 पेज : 272 पर क़ुर्बानी के जानवर की उम्र में साफ लिखा है : व मिनल् बक़रि वल् जामूसि मा लहू सनतान" (और गाय और भैंस की उम्र दो साल है) हदीस में कुर्बानी के जानवरों में सिर्फ तीन नाम आए हैं इबिल, बक़र, ग़नम (ऊँट गाय और भेड़ बकरियाँ) यह सच है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने भैंस की क़ुर्बानी नहीं फ़रमाई जिस का सबब यह भी हो सकता है कि मदीने तय्यिबा में भैंस मुहय्या न थी। फिर आप से भैंस की कुर्बानी का मना साबित नहीं है।

हमारे मुल्क के जो हालात हैं जिन में गाय की क़ुर्बानी के साथ मुसलमान भी कुर्बान हो जाता है, गाय की क़ुर्बानी से बचना ज़रुरी है और भैंस और उसकी जिन्स भैंसा पड़वे की कुर्बानी जो पूरे मुल्क में राइज है उसी को अपनाना चाहिये और जिन हज़रात की तहक़ीक़ में भैंस की क़ुर्बानी जाइज़ नहीं है वह बक़रे की क़ुर्बानी करें मगर भैंस की क़ुर्बानी को ग़लत बता कर इंतिशार न पैदा करें कि पड़वे की कुर्बानी जाइज़ है पड़वा (भैंस का बच्चा) सिहत मन्द हो, दो साल का हो, पड़वे में एक से सात हिस्सों तक हो सकते हैं।

प्रश्न : एक साहब का कहना है कि खस्सी जानवर के खुसये निकाल लिये जाते हैं या बेकार कर दिये जाते हैं इसलिये वह ऐबदार हो गया उस की कुर्बानी कैसे जाइज है?

उत्तर : हमारे हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने खस्सी भेड़े कुर्बानी में जब्ह किये हैं लिहाजा खस्सी जानवरो की कुर्बानी जाइज ही नहीं बेहतर हैं। हाँ गैर खस्सी जानवर की कुर्बानी भी जाइज है।

प्रश्न : जिस जानवर में सात हिस्से हो सकते हैं उस में अक़ीक़ा का हिस्सा या हिस्से लिये जा सकते हैं या नहीं?

उत्तर : अक़ीक़ा भी एक तरह की कुर्बानी ही है इस लिये अहनाफ़ के नज़दीक बड़े जानवर के क़ुर्बानी के सात हिस्सों में अक़ीक़े के हिस्से लिये जा सकते हैं और यह भी दुरुस्त है कि अकीके में पूरा बड़ा जानवर ज़ब्ह किया जाए।

प्रश्न : बड़े जानवर में जिस में सात हिस्सें होते हैं उस में अगर एक हिस्सा हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का रखा जाए तो कोई कबाहत तो नहीं है?

उत्तर : कोई कबाहत नहीं बिल्कुल जाइज और दुरुस्त है मगर उस हिस्से की कीमत कोई एक शख़्स अदा करे बड़ा सवाब पाएगा, अल्लाह तौफ़िक़ दे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की तरफ़ से एक से जियादा हिस्सों की कुर्बानी की जाए। लेकिन हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के हिस्से में अगर सातों आदमी शरीक हुए तो किसी की कुर्बानी न हो गी खूब समझ लें बरेली, देव बन्द दोनों जगह यह सुवाल भेजा गया दोनो जगह से यही जवाब आया कि अगर सातवाँ हिस्सा जो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का रखा जाएगा अगर

उस में सातों शरीक हुऐ तो किसी की कुर्बानी न होगी। कुछ इलाकों में आम रिवाज हो गया है कि बड़े जानवर में सिर्फ छः साझीदार शरीक होते हैं और सातवाँ नाम हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का लिया जाता है। इसकी इस्लाह बहुत जरूरी है आप हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की महब्बत में उन की जानिब से कुर्बानी करना चाहते हैं तो पूरा हिस्सा कुर्बान कीजिये एक हिस्से में किसी का हिस्सा न लगाइये।

प्रश्न : जो हाजी मिना में कुर्बानी करता है क्या उस की बकरईद वाली कुर्बानी मुआफ हो जाएगी?

उत्तर : हज तीन तरह का होता है, इफ़्राद, तमत्तुअ और किरान, तमत्तुअ या किरान में हाजी पर वाजिब है कि वह मिना में एक कुर्बानी करे। बकरईद वाली कुर्बानी जो हर मालदार पर हर साल वाजिब है वह इस से अलग है मगर वह मुसाफिर पर नहीं है चाहे वह मालदार हो पस अगर हाजी कुर्बानी के दिनों में मुसाफिर है तो उस पर कुर्बानी नहीं है। हाजी सोचे गा कि हम तो मुसाफिर हैं। लेकिन मुसाफिर अपने लम्बे सफर में कहीं पन्दरह दिन ठहरने की नीयत कर लेता है तो वह मुसाफिर नहीं मुकीम कहलाए गा। लिहाजा अगर हाजी का प्रोग्राम इस तरह बना कि उस ने मक्का मुकर्रमा में पन्दरह दिन ठरहने की नीयत कर ली और उसी पन्दरह दिनों के बीच कुर्बानी के दिन आ जाते है तो हाजी साहिब पर बकरईद वाली कुर्बानी भी वाजिब है चाहे वह मिना में करे या अपने घर वालों को कह दे वह घर पर कर दें मगर याद रहे हाजी साहिब के कहे बिना घर वाले आप की जानिब से कुर्बानी कर देंगे तो सवाब तो आप को मिलेगा मगर वाजिब अदा न होगा। मगर खूब याद रहे कि अल्लाह तौफीक दे तो वजूब के बिना भी कुर्बानी कर के सवाब लिया जाए।

प्रश्न : हज के बअ़द मदीना तय्यिबा की हाजिरी का क्या हुक्म है?

उत्तर : अहनाफ के नजदीक हाजी को इस्तिताअत हो तो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की कब्र शरीफ पर हाजिर होकर सलाम पेश करना जरूरी है और हाजिरी न देना बड़ी महरूमी व बद बख्ती है अलबत्ता खुदा न करे किसे के पास मदीना तय्यिबा जोन का खर्च न हो लेकिन उस का जी चाहता हो मगर न जा सके जिस का उस को दुख हो तो इनशाअल्लाह उस पर कोई गुनाह न होगा। और अब तो हिन्दुस्तान से हज करने वालों के निजाम में मदीना तय्यिबा का सफर लाजिमी हो गया है। अब तो सभी जाते हैं।

प्रश्न : मदीना तय्यिबा के सफर में क्या नीयत की जाए कब्र शरीफ की जियारत की या मसजिदे नबवी की जियारत की।

उत्तर : बेहतर होगा कि दोनों की नीयत एक साथ हो।

प्रश्न : कुछ लोग कहते हैं कि हदीस में है कि तीन मस्जिदों के अलावा के लिये सफर का सामान न बान्धो मस्जिदे हरमे मक्की, मस्जिदे हरमे मदनी, और मस्जिदे अक्सा (बैतुल मुकद्दस) लिहाजा किसी कब्र की जियारत के लिये सफर करना जाइज नहीं है। इसी तरह वह उन हदीसों को कमजोर या गैर साबित मानते है जिन में हज करने वालों के लिये कब्र शरीफ पर हाजिरी की ताकीद है।

उत्तर : उलमाए अहनाफ उन हदीसों को काबिले अमल मानते है जो हाजियों के लिये कब्र शरीफ पर हाजिरी के सिलसिले में आई है। फिर जब आम मुसलमानों की कब्रो पर जाना और सलाम पढ़ना सुन्नत है तो अल्लाह के रसूल मुहसिने अअ़जम की कब्र शरीफ पर हाजिरी, के सवाब को सोचा जा सकता है। रही बात तीन मस्जिदों के अलावा सफर करने की मनाही अहनाफ के नजदीक दूसरी मसजिदों के लिये है न कि कब्र शरीफ के लिये लिहाजा सिर्फ कब्र शरीफ की जियारत के लिये सफर करना अहनाफ के लिये जाइज ही नहीं काबिले अज्र व सवाब है। अलबत्ता जो लोग उस हदीस से कुबूर के लिये सफर करने को नाजाइज समझते है हम उन को भी हक़ पर समझते हैं उन में कुछ बड़े उलमा भी है।

❑❑

यतीम की कहानी अपनी जबानी

बसीरत अफरोज़

इदारा

हज़रत कासिम बिन मुहम्मद बिन अबूबक्र सिद्दीक अपनी यतीमी का वाकिआ इस तरह बयान करते हैं।

जब मेरे वालिद मुहम्मद बिन अबूबक्र मुल्के मिस्र में शहीद हो गये मेरे चचा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र मुझको और मेरी कमसिन बहन को मदीना मुनव्वरा ले आये– हमारी फूफी साहबा उम्मुल मोमिनीन हज़रत सय्यदा आइशा सिद्दीका ने अपने भाई अब्दुर्रहमान से हमें गोद लेलिया और बैते नबवी में हमारी परवरिश करने लगीं।

मैंने अपनी जिन्दगी में किसी माँ–बाप को ऐसा शफीक व करीम नहीं देखा जैसा कि फूफी साहबा का हमारे साथ बरताव रहा वह हम दोनों भाई बहन को पहले अपने हाथ से खिलाती पिलाती और बाकी खाना खुद तनाऊल करतीं हमारे खेल–कूद और खाने पीने सोने जागने के औकात मुकर्रर थे वक्त पर सारे काम खुद अनजाम दिया करती थीं, हमें अपनी यतीमी का कतअन एहसास होने न दिया।

इस खुसूसी परवरिश के अलावा हमारी तालीम व तर्बियत पर खुसूसी तवज्जुह देती थीं। अच्छे अखलाक की ताकीद और बुरे अखलाक से परहेज की हर वक्त तफहीम करतीं, कुर्आने–करीम और अहादीस रसूल की तालीम का ख़ास मामूल था हमें कम उमरी में कुर्आन व हीदस पर अच्छा ख़ासा उबूर हो चुका था हम दोनों भाई बहन को जब दुन्या का कुछ शऊर बेदार हुआ तो एक दिन हमें अच्छे और कीमती कपड़े पहनाये और खुशबू व इत्र में बसा कर अपने भाई अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र को तलब किया और यह कहकर उनके हवाले किया कि भाई साहब मैंने तुम्हारे दोनों भतीजों को तुमसे ले लिया था मकसूद यह था कि इन बच्चों की खुसूसी परवरिश करुं वैसे भी यह दोनों बच्चे मेरे भतीजे हैं इस लिहाज से तुम्हारा और मेरा रिश्ता यकसां है। लेकिन तुमने मेरे इस इकदाम को पसन्द नहीं किया और मेरे घर आना जाना कम कर दिया।

मुझे इसका एहसास है लेकिन वाकिआ यह है कि मैंने दोनो यतीम बच्चो के बारे में तुमपर कोई बदगुमानी नहीं की, और न इसका अन्देशा किया कि तुम उनकी तालीम व तरबियत में एहतमाम न करोगे, लेकिन बात यह है कि आप का कुम्बा बड़ा है और अफराद खानदान की भी कसरत है और यह दो यतीम जो निहायत कम सिन हैं इन की खुसूसी तवज्जुह की जरुरत थी।

मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद घरेलू उमूर से फारिग हो चुकी हूं अब कोई जिम्मेदारी न थी इसके अलावा बच्चों से वैसे भी मेरा घर खाली था। मेरा घर बच्चों की तरबीयत के लिये ज्यादा मुनासिब था, इसलिये मैं इन दोनों बच्चों को तुमसे गोद ले लिया अब बच्चे शऊर को पहुँच गये हैं आगे की तालीम व तरबियत की जिम्मेदारी तुम कुबूल करलो, मेरा मकसद हासिल हो चुका।

हज़रत कासिम बिन मुहम्मद कहते हैं कि हमारे यह चचा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन अबूबक्र अपने घर ले गये और अपने अफरादे खानदान में शामिल कर लिया।

चूंकि हमारा दिल बैते नबवी के लैल व नहार से मानूस हो चुका था अपनी फूफी हज़रत सय्यदा आइशा सिद्दीका से दूरी बरदाशत न कर सका वक्तन फवक्तन बैते आइशा आया करता और फूफी जान सहाबा से रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आदात व अतवार और आप की जिन्दगी के हालात मालूम करता एक दिन मैंने फूफी जान साहबा से अर्ज किया :–

अम्मा जान रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके दोनों रफीक हज़रत सय्यदना अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फारूक़ की कब्रों की जियारत करादें उन दिनों हुजर–ए–पाक बन्द कर दिया गया था लोग बाहर ही से उसकी जियारत कर लिया करते थे।

हज़रत सय्यदा आइशा सिद्दीका ने मेरी ख़्वाहिश को पूरा किया। मैंने देखा कि तीनों कबरें न ऊँची हैं और

न ही ज़मीन के बराबर हैं (मामूली सी ऊँचाई थीं जिसको अहादीस की किताबों मे एक बालिश्त ऊँची कहा गया है।) मैंने कहा अम्मा जान इनमें रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कब्र शरीफ कौन सी हैं?

हाथ के इशारह से फरमाया यह! उसके बाद माँ हज़रत सय्यदह की आँखों से आँसू के दो कतरे गिरपड़े जिसको मैंने देख लिया हज़रत सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा ने इसको महसूस किया और अपने आप को सम्भाल लिया।

मैंने देखा कि कब्रे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरमुबारक से जरा नीचे सीना मुबारक के पास से दूसरी कब्र थी, इशारे से बताया यह तुम्हारे दादा जान सय्यदना अबू बक्र की कब्र है। फिर मैंने कहा और तीसरी कब्र हज़रत सय्यदना उमर फारूक की है? फरमाया हाँ सय्सदना उमर फारुक की कब्र सय्यदना अबूबक्र की कमरके क़रीब थी। (इस तरह सय्यदना उमर फारुक का सर रसूलुलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कदम मुबारक के मुकाबिल था) हुजर–ए–शरीफ की पाक कब्रों का नकशा तक़रीबन इसी तरह है।

मैंने यह तफसील अपनी फूफी उम्मुल मोमिनीन सय्यदा आइशा सिद्दीका से हासिल की हैं।

कुछ ही अर्सा बाद यही कासिम बिन मुहम्मद इमामुल हदीस के लकब से पुकारे गये, यह ऐसा लकब था जो सिर्फ उसी आलिम को दिया जाता था जो अपने जमाने में किताबुल्लाह और सुन्नते रसलुल्लाह का सब से बड़ा आलिम हो। चुनानचे आप की तरफ रुजूअ़े आम हुआ। अवाम व खवास सभी ने आप के फैज़ से फाइदा उठाया।

❑❑

इस्लामी इन्साफ देखकर.....

आली कद्र यह दिरअ हक़ीकतन अमीरुल मोमिनीन ही की है। जब यह जंग सिफ्फीन का मारका सर करने जा रहे थे उस लशकर में मैं भी था। दरमियान राह अमीरुल मोमिनीन की यह दिरअ गिर पड़ी रात अनधेरी थी, मैंने उठाली। मेरी नियत ख़ुद ख़राब थी। अब अमीरुल मोमिनीन की ख़िदमत में पेश करता हूं।

सय्यदना हज़रत अली ने जब यह देखा कि हक़ वाजेह हो गया तो यहूदी से फरमाया तूभी सच्चा तेरी बात भी सच्ची। मैंने यह दिराअ तुझको माफ कर दी। और मजीद यह घोड़ा भी तुहफा में पेश है।

इन्साफ और ईसार के इस अजीम वाकिया को कुछ जियादह मुद्दत न गुजरी थी। कि फ्रिकये खवारिज के खिलाफ जिसकी सरकूबी के लिये अमीरुल मोमिनीन हज़रत सय्यदना अली योमुन्नहरवान में मसरुफे किताल थे यही नौ मुस्लिम नवजवान (यहूदी) अमीरुल मोमिनीन सय्यदना अली के साथ मारका में पेश–पेश था। और फिर किताल में शहीद हो गया।

"फरहमतुल्लाह व बरकातुह"

❑❑

इस्लामी सभ्यता का स्तर

इस पर हमदर्दाना दृष्टिकोण से खोज या इन के दरबारी जीवन के गैर इस्लामी प्रदर्शन की प्रशंसा या इब्ने सीना या इब्ने रुश्द और मसकूया को इस्लामी इतिहास के नायक की हैसियत से प्रस्तुत करने का प्रयास व राष्ट्रों की पुरानी सभ्यता जैसे फिरऔन की ओर फिरऔनी सभ्सयता व सस्कृति के जीवित करने की दावत और प्रेम व श्रेष्ठता के साथ इसकी प्रंशसा इस्लामी सभ्यता की बिल्कुल सेवा नहीं कहा जा सकता यह तो केवल इस बात की दलील है कि हम इस्लामी संभ्यता के स्तर से बेखबर व अज्ञान हैं या कमतर होने की भावना का शिकार हैं यह स्वार्थ एंव पेट पूजा के इस दौर में इस्लाम के स्तर को खुलकर बयान भी नहीं कर सकते और ख़ुदा से ज्यादा उन इन्सानों से डरते हैं जो हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते हैं।

संस्कृति कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानांतरित की जा सकती हो, इस को तो मानवी कल्पनाओं और ईश्वरी नियमों के बीच में ढूंढना चाहिये अगर वह खुदाई उसूल और सुन्नते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सलल्म) के अंतर्गत हों तो संस्कृति है और यदि उस के विरुद्ध हों तो असभ्यता है।

सत्य त्यागने पर पथ भ्रष्टता के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

❑❑

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम

इदशाद अली खाँ

बैतुल मकदिस में एक इबादत गुजार महिला रहती थीं, जिनका नाम "हुना बिन्त फाकूद" था। उनकी शादी हुए कई वर्ष बीत गये थे, मगर फिर भी वे बेऔलाद थीं। एक दिन उस महिला ने एक चिड़िया को देखा कि वह अपने बच्चे को चोंच के जरिये खाना खिला रही थी। तब उस महिला के दिल में एक बच्चे के लिये इच्छा जागृत हुई। उसने अल्लाह तआला से दुआ की कि अगर उसके यहाँ बच्चा पैदा हुआ, तो उसे अल्लाह के घर की ख़िदमत व इबादत के लिए देदूंगी। अल्लाह के हुक्म से उस खातून को एक बच्ची पैदा हुई। जिसका नाम उसके माँ–बाप ने "हज़रत मरयम" रखा। आपके पिता का नाम इमरान था, जो हज़रत दाऊद (अलैहि0) की नस्ल से थे।

हुना बिन्त फाकूद हज़रत जकरिया (अलैहि0) की बीवी की बहन थीं, इसलिये हज़रत जकरिया (अलैहि0) हज़रत मरयम के खालू लगते थे। हजतर मरयम के पिता इमरान की मृत्यु हो चुकी थी, इसलिये आपकी परवरिश की जिम्मेदारी हज़रत जकरिया (अलैहि0) पर आ पड़ी। हज़रत जकरिया (अलैहि0) ने मस्जिदे–अक्सा में हज़रत मरयम के लिये एक कमरा रहने के लिये सुरक्षित कर दिया। हज़रत मरयम उस कमरे में अल्लाह की इबादत करतीं और जिम्मेदारी से बैतुलमकदिस की ख़िदमत करती थीं।

हज़रत जकरिया (अलैहि0) उनका हालचाल मालूम करने के लिये जब उनके कमरे में जाते, तो वहाँ गैर–मौसमी फल पड़े देखते। एक दिन उन्होंने पूछा कि यह फल कहाँ से आये हैं, तो हज़रत मरयम ने जवाब दिया कि अल्लाह की तरफ से आये हैं। निस्संदेह अल्लाह जिसे चाहता है, उसे बेहिसाब रज्क अता फरमाता है। हज़रत जकरिया (अलैहि0) बहुत बूढ़े हो चुके थे, लेकिन अभी तक औलाद की नेमत से वंचित थे। मरयम का जवाब सुनकर आपने अल्लाह तआला से दुआ की, "ऐ मेरे रब! मुझे अपनी तरफ से नेक औलाद अता फरमा, तू निस्संदेह दुआ सुनने वाला है।" आपकी दुआ कुबूल हुई और अल्लाह ने आपको एक बेटे हज़रत यहया (अलैहि0) की खुशखबरी दी, जो बाद में अल्लाह के पैगम्बर बने।

हज़रत जकरिया (अलैहि0) ने हज़रत मरयम को मस्जिदे अक्सा के जिस कमरे में रखा, उसमें कोई गैर नहीं जा सकता था। वह केवल पानी लेने या खाना लेने जैसी जरूरी कामों के लिये ही मस्जिद से बाहर निकलती थीं। एक दिन वह अपने किसी काम के लिये मस्जिद से बाहर निकलीं और मस्जिदे अक्सा के पूर्वी भाग में आयीं, जहाँ कोई और न था। तब अल्लाह तआला ने उनकी तरफ जिबरईल (अलैहि0) को भेजा। वह मानव रूप में हज़रत मरयम के सामने आये, उन्हें देखकर हज़रत मरयम भयभीत होकर कहने लगीं, "मैं तुझसे रहमान की पनाह चाहती हूं, अगर तू अल्लाह से डरने वाला है।" हज़रत जिबरईल (अलैहि0) ने फरमाया कि में तो अल्लाह की तरफ से भेजा गया दूत हूं और तुझे एक पवित्र लड़का देने आया हूं। हज़रत मरयम ने कहा कि भला मेरे यहाँ बच्चा कैसे पैदा होगा, जबकि मेरी अभी शादी नहीं हुई है। हज़रत जिबरईल (अलैहि0) ने कहा कि अल्लाह हर चीज पर कादिर है। वह जब किसी चीज को बनाने का इरादा करता हे, तो उसे कह देता है कि हो जा, तो वह हो जाती है।

यह सुनकर हज़रत मरयम ने अल्लाह के फैसले को स्वीकार करते हुए सिर झुका लिया। वह समझ गयीं कि इसमें एक बहुत बड़ी आजमाइश है। लोग बच्चे के कारण उनके बारे में बातें बनाएंगे, क्योंकि

सुन्नत यही है कि शादी के बाद औलाद हो, लेकिन कुदरते इलाही है कि अल्लाह के हुक्म से बच्चा पैदा हो जाए।

हज़रत जिबरईल (अलैहि0) ने बच्चे की पैदाइश के बारे में अल्लाह का आदेश बताने के बाद हज़रत मरयम के सीने पर फूंक मारी और वापस चले गये। अल्लाह की रहमत और कुदरत से 9 महीने बाद हज़रत मरयम ने एक बच्चे को जन्म दिया।

हज़रत ईसा (अलैहि0) के जन्म की घटना इस तरह है कि जब पैदाइश का समय निकट आया, तो हज़रत मरयम मस्जिदे अक्सा से निकलकर शहर से बाहर एक खुले मैदान में आयीं और वहाँ एक खजूर के सूखे पेड़ के नीचे बैठ गयीं। वहीं पर हज़रत ईसा (अलैहि0) का जन्म हुआ। उस मैदान में खाने–पीने का कुछ भी सामान न था, लेकिन अल्लाह के आदेश से हज़रत मरयम के क़रीब ही पानी का एक चश्मा जारी हो गया। फिर अल्लाह तआला ने हज़रत मरयम से फरमाया कि इस खजूर के तने को हिला। यह तेरे सामने ताजा और पकी खजूरें गिरा देगा। हज़रत मरयम ने खजूर के पेड़ पर नजर डाली, वह पेड़ जो बच्चे के जन्म के समय एकदम सूखा था, अब फलों से लदा हुआ था।

हज़रत मरयम, ईसा (अलैहि0) के जन्म के बाद आपको लेकर वापस बैतुल मकदिस में आयीं, तो अल्लाह ने आपको वह्य (प्रकाशना) के जरिये समझा दिया था कि अगर तुझसे कोई बच्चे के बारे में सवाल करे, तो कहना मैंने रोजा रखा है, इसलिये मैं आज किसी से बात न करूंगी। अतः आप वापस बैतुल मकदिस पहुँची, तो आपकी कौम बनी इसराईल के लोगों ने आपकी गोद में बच्चे को देखकर तरह–तरह की बातें बनायीं और आप पर दोषारोपण करना शुरू कर दिया। आपने लोगों से इशारों में कहा कि मैं आज रोजे से हूं, जो कुछ पूछना हो, इस बच्चे से पूछ लो।

लोगों ने कहा कि हम इस बच्चे से कैसे बात कर सकते हैं? यह गोद का बच्चा कैसे बात कर सकता है? उनकी इस आपत्ति पर नवजात बच्चे हज़रत ईसा (अलैहि0) के मुंह से यह बोल निकला, "मैं अल्लाह का बन्दा हूं, उसने मुझे किताब अता फरमायी और मुझे अपना पैगम्बर बनाया है। और उसने मुझे बरकत से नवाजा है। उसने मुझे नमाज़ और जकात का आदेश दिया है, जब तक मैं दुनिया में रहूं। और उसने मुझे माँ का आज्ञाकारी बेटा बनाया है और मुझे उदंड नहीं बनाया, और मुझ पर, मेरे जन्म के दिन पर और मेरी मौत के दिन और जिस दिन मैं दोबारा जीवित खड़ा किया जाऊँगा, सलाम ही सलाम है।"

हज़रत ईसा (अलैहि0) की पैदाइश बैतुमकदिस से क़रीब 9 मील की दूरी पर कोहे सिरात के टीले के पास हुई थी। जो अब "बेतुल लहम" के नाम से प्रसिद्ध है। जिस रात ईसा मसीह पैदा हुए, उसी रात फारस के बादशाह ने आसमान पर एक नया सितारा चमकते हुए देखा। उसने अपने दरबार के ज्योतिषियों से पूछा, तो उन्होंने बताया कि इस सितारे का निकलना किसी बड़ी हस्ती की पैदाइश का संकेत देता है, जो शाम देश में पैदा हुआ है। तब फारस के बादशाह ने खुशबुओं का बढ़िया उपहार देकर एक प्रतिनिधिमंडल सीरिया (शाम) भेजा कि वे उस बच्चे के बारे में पूरा हाल मालूम करें। प्रतिनिधिमंडल शाम पहुँचा और यहूदियों से उस बच्चे के बारे में पूछा, जो भविष्य में महान व्यक्ति बनने वाला है। यहूदियों ने इस बात की खबर अपने बादशाह होरोलेस से कर दी।

शाह फारस का प्रतिनिधिमंडल वहाँ से बैतुल मकदिस पहुँचा और जब हज़रत ईसा (अलैहि0) को देखा तो अपने परम्परा के अनुसार पहले उनको सजदा किया, फिर कुछ दिन वहीं पर ठहरे रहे। निवास के दौरान प्रतिनिधिमंडल के कुछ लोगों ने सपना देखा कि शाम का बादशाह हेरोलेस इस बच्चे का दुश्मन होगा, इसलिये अब तुम इसके पास न जाओ। सुबह हुई, तो प्रतिनिधिमंडल वापस जाने की तैयारी करते हुए हज़रत मरयम को अपना ख्वाब सुनाया और कहा कि ऐसा लगता है कि यहूदी बादशाह की नीयत खराब है और वह इस पवित्र बच्चे का दुश्मन है, इसलिये तुम इसे

ऐसी जगह रखो, जो बादशाह की पहुँच से बाहर हो।

इस मश्वरे के बाद हज़रत मरयम, हज़रत ईसा (अलैहि0) को अपने कुछ रिश्तेदारों के पास मिस्र ले गयीं और वहाँ से नासिरा चली गयीं। फिर जब ईसा (अलैहि0) की आयु 13 वर्ष की हो गयी, तो उनको साथ लेकर दोबारा बैतुल मकदिस वापस आ गयीं। अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा (अलैहि0) को 13 वर्ष की आयु में मिस्र से ईलिया की और हिज़रत करने का ओदश दिया। आप और आपकी माता एक खच्चर पर सवार होकर बैतुल ईलिया पहुँचे। यद्यपि अल्लाह ने आपको "इंजील" किताब दी और तौरात की शिक्षा दी। मुर्दों को जीवित करना, बीमारों को ठीक करना इत्यादि। बहुत से चमत्कार के साथ आपको अल्लाह तआला ने बनी इसराईल (यहूदियों) की तरफ भेजा।

आप बैतुल मकदिस वापस आये, तो लोगों ने आपके बारे में बातें करना शुरू कर दीं, क्योंकि उन्होंने आपको कई चमत्कार करते हुए देखा। आपने उनको अल्लाह की तरफ बुलाया और बनी इसराईल को तब्लीग की कि वे लोग अल्लाह की इबादत करें। आपसे पहले बनी इसराईल हर तरह की बुराइयों से ग्रस्त थे। यहूदियों के बादशाह "हेरोलेस" ने अपनी प्रेमिका के इशारे पर हज़रत यह्या (अलैहि0) को बुरी तरह से कत्ल कर दिया था।

अतः हज़रत ईसा (अलैहि0) ने यह ऐलान किया कि वे अल्लाह के पैगम्बर है और हक़ की आवाज बनकर आये हैं, तो बनी इसराईल में हलचल मच गयी। आपने बादशाह, मंत्री, दरबारियों, जनता तथा सभाओं में यहाँ तक कि आपने गली, कूचे तथा बाजारों में अल्लाह का संदेश सुनाया।

"लोगो! अल्लाह ने मुझे अपना पैगम्बर बनाकर तुम्हारे पास भेजा है। मैं उसकी तरफ से संमार्ग का संदेश लेकर आया हूं और हमारे हाथ में जो खुदा का कानून (तौरात) है, जिसको तुमने अज्ञानता के कारण छोड़ दिया है, मैं उसकी तस्दीक करता हूं और उसकी मजीद तक्मील के लिये खुदा की किताब इंजील लाया हूं। यह किताब सच और झूठ का निर्णय करेगी। सुनो और समझो तथा आज्ञापालन के लिये खुदा के सामने झुक जाओं, यही दीन और दुनिया की भलाई का रास्ता है।"

हज़रत ईसा (अलैहि0) की बातें सुनकर बनी इसराईल के लोग बहुत नाराज हुए। कुछ लोग अल्लाह पर ईमान ले आये। इन ईमान ले आने वालों को हवारी कहा जाता है। हज़रत ईसा (अलैहि0) के ये हवारी अधिकतर गरीब व मजदूर थे। अतः जब हज़रत ईसा (अलैहि0) ने दीने हक़ की मदद के लिये पुकारा, तो सबसे पहले इन्हीं हस्तियों ने अल्लाह के दीन के मददगार होने का नारा बुलन्द किया।

कुर्आन में हज़रत मरयम की मृत्यु के बारे में कोई जिक्र नहीं मिलता, परन्तु एक रिवायत है कि हज़रत ईसा (अलैहि0) उन्हें लेकर बैतुल मकदिस से शाम की तरफ जा रहे थे कि रास्ते में वह बीमार हो गयीं। उस जगह जंगल बियाबान के सिवा कुछ न था। हज़रत मरयम ने हज़रत ईसा (अलैहि0) से कहा कि मुझे कहीं से घास की जड़ ला दो। हज़रत ईसा (अलैहि0) अपनी माँ के आदेश का पालन करने के लिये रवाना हो गये। उनके जाने के बाद हज़रत मरयम की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गयी और उनकी मृत्यु हो गयी। अल्लाह के आदेश से जन्नत की हूरों ने आकर उनकी मैयत (लाश) को गुस्ल दिया और जन्नती कपड़ों का कफ़न पहनाकर उसी जगह दफ़न कर दिया।

हज़रत ईसा (अलैहि0) को अल्लाह ने बहुत से चमत्कार अता फरमाया था। आप जिस जमाने में दुनिया में आये, उस समय हिक्मत व तिब का फ़न चरमोत्कर्ष पर था, लेकिन अल्लाह ने आपको ऐसे चमत्कार प्रदान किये थे, जो उस समय के आयुर्वेदाचार्य और वैज्ञानिक के बस की बात न थी। जैसे हज़रत ईसा (अलैहि0) मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। जनमाधों को बिल्कुल ठीक कर देते थे, कोढ़ी को ठीक कर देते थे।

एक दिन की बात है कि हज़रत ईसा (अलैहि0) ने अपने साथियों को तीन दिन रोजा रखने का आदेश दिया। जब रोजे पूरे हो गये, तो उनके साथ्यिों ने कहा कि हमारे

खाने–पीने के लिये आसमान से दस्तरख्वान नाजिल किया जाए। हज़रत ईसा (अलैहि0) ने अपने साथियों को बहुत समझाया, लेकिन वे न माने। मजबूर होकर हज़रत ईसा (अलैहि0) ने अल्लाह से दुआ की।

अल्लाह तआला ने ईसा (अलैहि0) की दुआ कुबूल फरमायी और आसमान से दस्तरख्वान उतारा। दस्तरख्वान हज़रत ईसा (अलैहि0) के सामने आकर रुक गया, जो रूमाल उठाया। देखा कि उसमें सात मछलियाँ और रोटियाँ रखें हुई थीं। कहते हैं कि उसमें सिरका, अनार और कई फल भी थे। हज़रत ईसा (अलैहि0) ने अपने साथियों को खाना खाने का आदेश दिया। उन्होंने कहा जब तक आप खाना नहीं खाएंगे, हम भी नहीं खाएंगे। आपने फरमाया कि तुमने ख़ुद ही इसका मुतालबा किया था, लेकिन वे न माने और शक के कारण पहले खाने से मना कर दिया। हज़रत ईसा (अलैहि0) उन लोगों का इन्कार सुनकर बीमार, बूढ़ों को खाने का आदेश दिया। उन सब लोगों ने खाना खा लिया। उस खाने की बरकत से सारे बीमार लोग ठीक हो गये। हवारियों ने मरीजों की ठीक होते देखा, तो खाना न खाने वाले बहुत शर्मिन्दा हुए।

एक दिन आपके साथियों ने आपको अपने आसपास मौजूद न पाया, तो वे लोग आपको तलाश करने लगे। किसी ने उन्हें बताया कि आप समन्दर की ओर गये हैं। आपके साथी आपको तलाश करते हुए समन्दर तक जा पहुँचे। उन्होंने देखा कि आप पानी पर चल रहे हैं। आपने एक चादर ओढ़ रखी है। आपके साथी हैरत से यह दृश्य देख रह थे। आप उनकी तरफ आने लगे, तो उनमें से एक व्यक्ति ने आपसे पूछा, "ऐ अल्लाह के नबी! क्या मैं आपकी ओर आऊँ? आपने कहा, हाँ आओ। उस व्यक्ति ने अपना एक पाँव पानी में रखा। जब दूसरा रखने लगा, तो बोल उठा, "ओह" मैं तो डूब गया ऐ अल्लाह के नबी।"

हज़रत ईसा (अलैहि0) ने फरमाया "ऐ कम ईमान वाले अपना हाथ मुझे दिखाओ। अगर आदम के बेटे के पास जौ के दाने के बराबर ईमान व यकीन हो, तो वह पानी पर चल सकता है।" आपसे पूछा गया कि आप किस चीज के सहारे पानी पर चल रहे थे। आपने फरमाया यकीन व ईमान के साथ।

हज़रत इब्ने अब्बास (रजि0) ने फरमाया कि बनी इसराईल के बादशाहों में से एक बादशाह की मृत्यु हो गयी, तो उसे चारपाई पर डालकर हज़रत ईसा (अलैहि0) के पास लाया गया। आपने अल्लाह तआला से बादशाह के जीवन के लिये दुआ की, तो अल्लाह ने बादशाह को जीवित कर दिया। लोगों ने यह विचित्र दृश्य देखा, तो आश्चर्यचकित रह गये।

हज़रत ईसा (अलैहि0) ने शादी नहीं की थी। आपके पास रहने के लिये कोई घर न था। आप इधर–उधर सफर करते रहते थे। आपका कोई ठिकाना न था, जिससे 'आपकी पहचान होती। आप मुर्दों को ज़िन्दा कर देते थे। सबसे पहले आपने एक मुर्दा लड़की को जीवित किया। अल्लाह ने आपको यह सारे मोजिज़ात (चमत्कार) अता फरमाये थे।

जब हज़रत ईसा (अलैहि0) ने यह महसूस किया कि बनी इसराईल का कुफ्र और उनकी सरगर्मियाँ बढ़ गयी हैं कि वे मेरी तौहीन बल्कि कत्ल करने के लिये सरगर्म हैं, तो उन्होंने अपने साथियों को जमा किया और उनके सामने पूरा हाल बयान करते हुए फरमाया, "इम्तिहान की घड़ी सर पर है, कड़ी आजमाइश का समय है। हक़ को मिटाने का षड्यंत्र रचा जा चुका है, इसलिये मुझे बताओ कि अल्लाह की राह में सच्चा मददगार कौन है? हवारियों ने आपकी बात सुनकर कहा कि हम सब अल्लाह के दीन के मददगार हैं।"

आप अपने साथियों की ओर से संतुष्ट होकर उनके साथ मकान में चले गये जिसका नाम "ऐनुलसलूक" था। यहूदियों ने उस मकान को घेर लिया। वह हर कीमत पर आप को मार डालना चाहते थे। आपके जांनिसार साथी आपके बचाव में डट गये। जब स्थिति बहुत नाजुक हो गयीं, तो उस स्थिति में अल्लाह तआला ने वहय के जरिये बशारत सुनायी।

"ईसा भयभीत न हो! तेरी मदद पूरी की जाएगी। मैं तुझको अपनी तरफ उठा लूंगा।

शेष पृष्ठ 38

भारत का संक्षिप्त इतिहास

मुगल काल

— इदारा

पिछले अंक से आगे.....

कन्नौज अथवा विलग्राम युद्ध

हुमायूं के आगरा पहुँचने के पहले ही कामरान लाहौर से आगरे चला आया था क्योंकि हिन्दाल के विद्रोह की सूचना पाने पर उसे बड़ी चिन्ता हुई और उसे दबाने के लिए वह आगरे चला आया। हिन्दाल डरकर अलवर भाग गया था, परन्तु कामरान ने उसे वहाँ से बुला लिया। अब चारों भाई आगरे में एकत्रित हुए और शेर खाँ का सामना करने के लिये योजनाएं बनाने लगे। चौसा के युद्ध में परास्त हो जाने पर भी अमीरों ने हुमायूं का साथ नहीं छोड़ा और वे उसके प्रति स्वामिभक्त बने रहे। परन्तु हुमायूं की सेना छिन्न–भिन्न हो गई थी। अतएवं हुमायूं की सबसे बड़ी और तात्कालिक समस्या एक सबल सेना के निर्माण करने की थी। कामरान के पास अब भी एक सुशिक्षित तथा सुदृढ़ सेना थी जिसका प्रयोग अफगानों के विरुद्ध किया जा सकता था। परन्तु भाग्य ने साथ न दिया। आगरे की जलवायु कामरान के अनुकूल न सिद्ध हुई और वह बीमार पड़ गया और लगभग तीन महीने तक बिस्तर पर पड़ा रहाँ। दुर्भाग्यवंश यह अफवाह फैल गई कि हुमायूं ने उसे विष दिलवा दिया है। चूंकि उस काल की राजनीति में यह सब बातें असम्भव न थीं अतएवं कामरान के मन में सन्देह उत्पन्न हो गया। इसके अतिरिक्त कामरान को पंजाब छोड़े लगभग एक वर्ष हो गया था और उत्तर–पश्चिम की राजनीत में इतने बड़े परिवर्तन हो रहे थे कि पंजाब तथा कन्दहार की रक्षा की चिन्ता हो रही थी। अतएवं उसने आगरे से तुरन्त चले जाने का निश्चय कर लिया। हुमायूं यह चाहता था कि कामरान अपनी पूरी सेना आगरे में छोड़ दे परन्तु कामरान ने ऐसा न किया। वह केवल तीन हजार सैनिकों को हुमायूं की सेवा में छोड़ने के लिये तैयार हुआ और शेष के साथ उसने लाहौर के लिये प्रस्थान कर दिया।

चौसा की विजय के उपरान्त शेर खाँ चुपचाप न बैठा। उसने बनारस में अपने को स्वतनत्र शासक घोषित कर दिया और शेर खाँ ने सुल्तान–ए–आदिल की उपाधि धारण की। अफगान सेना बंगाल को फिर से जीत लिया और वहाँ के मुगल गवर्नर की हत्या कर दी। अब शेर खाँ ने हिन्दुस्तान–विजय की योजना बनाई। उसने अपने पुत्र कुत्ब खाँ को यमुना नदी के किनारे–किनारे आगरे की ओर बढ़ने का आदेश दिया और स्वयं एक सेना के साथ कन्नौज के लिये प्रस्थान कर दिया। कुत्ब खाँ का मुगल सेना के साथ कालपी के निकट भीषण संघर्ष हुआ जिसमें कुत्ब खाँ परास्त हुआ और मारा गया। 13 मार्च 1540 ई0 को हुमायूं ने शेरशाह का सामना करने के लिए आगरे को प्रस्थान कर दिया। हुमायूं ने गंगा नदी को पार कर लिया ओर उसके किनारे पर अपना पड़ाव डाल दिया। अब वह शेरशाह की गतिविधि को देखता रहा। शेरशाह भी खवास खाँ की प्रतीक्षा कर रहा था और जब वह पूर्व से आ गया तब शेरशाह भी युद्ध करने के लिये तैयार हो गया। मुगलों की सेना अफगान सेना को अपेक्षा कुछ निचले स्थान में थी। हुमायूं जिस स्थान पर वह पड़ाव डाले था, दुर्भाग्य से वर्षा के कारण वह पानी से भर गया। हुमायूं ने अपनी सेना को एक ऊँचे स्थान पर ले जाने का प्रयत्न किया। शेरशाह इस सुअवसर की ताक में था। वह मुगल सेना के दोनों पक्षों पर टूट पड़ा। मुगल सेना अस्त–व्यस्त हो गई और उसमें भगदड़ मच गई। हुमायूं ने हिन्दाल तथा अस्करी के साथ गंगा नदी को पार कर लिया और भाग कर आगरे पहुँच गया।

हुमायूं का पलायन

शेरशाह ने मुगलों का पीछा न छोड़ा। उसने उनका पीछा करने के लिए एक सेना सम्भल की ओर और दूसरी आगरे की ओर भेज दी। हुमायू अत्यन्त भयभीत हो गया।

वह केवल एक रात आगरे में रहा। दूसरे दिन अपने परिवार तथा कुछ खजाने के साथ उसने दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। रोहतास में हिन्दाल भी उससे आ मिला। अब दोनों भाइयों ने लाहौर के लिये प्रस्थान कर दिया। लाहौर में मिर्जा अस्करी भी उनसे आ मिला। अब चारो भाइयों ने मिल कर संकटापन्न स्थिति पर विचार करना आरम्भ करना आरम्भ किया, परन्तु वे किसी निष्कर्ष पर न पहुँचे। शेरशाह से लोहा लेना असम्भव प्रतीत हुआ। कामरान ने पंजाब को भी सुरक्षित रखने की आशा छोड दी। अतएवं उसने अफगानिस्तान चले जाने और काबुल तथा कन्दहार को सुरक्षित रखने का निश्चय कर लिया; फलंतः कामरान तथा मिर्जा अस्करी अफगानिस्तान चले गये। हुमायूं ने हिन्दाल के साथ सिन्ध के लिय प्रस्थान कर दिया। अब शेरशाह के लिये रास्त साफ था। वह बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ा और उसने सम्पूर्ण पंजाब पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार मुगलों को उसने सिन्ध नदी के उस पार खदेड़ दिया और बाबर के पुत्रों को निर्वासित कर दिया।

हुमायूं की विफलता के कारणा

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिस साम्राज्य की स्थापना बाबार ने पानीपत तथा घाघरा के युद्धों में अफगानों को परास्त करके की थी उसे हुमायूं ने चौसा तथा कन्नौज के युद्धों में शेरशाह से पराजित होकर खो दिया। हुमायूं बड़ा वीर, साहसी तथा अनुभवी सेनानायक था फिर वह शेरशाह के साथ कैसे असफल हो गया। हुमायूं तथा शेरशाह के संघर्ष का समीक्षात्मक अध्ययन करने पर हुमायूं की विफलता के निम्नलिखित कारण प्रतीत होते हैं :–

(1) भाइयों का सहयोग

प्रायः इतिहासकारों ने हुमायूं की विफलता का यह कारण बताया है कि उसे अपने भाइयों का सहयोग न प्राप्त हुआ और वे उसके साथ विवश्वासघात तथा उसका विरोध करते ही गये। परन्तु यह धारणा तथ्यसंगत नहीं प्रतीत होती। अब यह सिद्ध हो चुका है कि हुमायूं के शासन–काल के प्रथम दस वर्षों में कामरान ने उसके साथ किसी भी प्रकार की शत्रुता न रखी वरन् वह उसका सम्मान करता रहा और उसका भक्त बना रहा। जब मिर्जा हिन्दाल ने विद्रोह कर दिया था तब कामरान लाहौर से आगरे चला आया थी और हिन्दाल को सही रास्ते पर लाकर हुमायूं की सहायता करने का प्रयत्न किया था। कन्नौज के युद्ध के बाद ही कामरान का विश्वास हुमायूं में न रह गया और उसने उसका साथ छोड़ दिया। जब हुमायूं ने अपने साम्राज्य का खो दिया तब कामरान का अपने साम्राज्य की सुरक्षा का प्रयत्न करना स्वाभाविक था। मिर्जा अस्करी ने हुमायूं के विरुद्ध कभी विद्रोह नहीं किया और वह सभी बड़े युद्धों में हुमायूं के साथ था। उसने बड़ी श्रद्धा–भक्ति के साथ हुमायूं की सेवा की थी। केवल कन्नौज के युद्ध के बाद ही वह कामरान के साथ चला गया था। हिन्दाल हुमायूं के विरुद्ध अवश्य विद्रोह कर बैठा था परन्तु इस प्रकार की दुर्घटना केवल एक बार घटी थी और वह भी अवांछनीय अमीरों के बहकाने से। इसमें सन्देह नहीं कि चौसा के युद्ध में हुमायूं की पराज्य का एक बहुत बड़ा कारण हिन्दाल का बिहार से आगरे भाग जाना था, परन्तु हिन्दाल ने किसी महत्वाकाँक्षा के कारण नहीं वरन् भयवश ऐसा किया था। हिन्दाल ने न कभी इसके पहले और न कभी इसके बाद ही हुमायूं के साथ किसी प्रकार का विश्वासघात किया वरन् उसने उसकी सेवा ही की और उसी की सेवा मे उसने अपने प्राण दे दिये। अतएवं हुमायूं की विफलता में उसके भाइयों का उत्तरदायित्व बहुत कम था।

(2) हुमायूं की चारित्रिक दुर्बलताएं

प्रायः इतिहासकारों ने हुमायूं की चारित्रिक दुर्बलताओं की उसकी विफलता का कारण बतलाया है और कहा है कि हुमायूं अफीमची, कोमल स्वभाव का तथा काहिल था। परन्तु यह धारणा ठीक नहीं प्रतीत होती। हुमायूं बड़ा ही वीर, साहसी तथा शान्त–स्वभाव का व्यक्ति था। उसमें उच्चकोटि की कार्य–क्षमता तथा क्रियाशीलता थी। वह बड़ा ही दयालु, सहृदय, बुद्धिमान तथा सभ्य एवं

शिष्ट व्यक्ति था। वह बड़ा ही योग्य तथा अनुभवी सेनानायक था। अतएवं उसमें सफल तथा लोकप्रिय शासक बनने के सभी गुण विद्यमान थे। जहाँ तक अफीम के व्यसन का आरोप है वह किसी भी नशे का इतना व्यसनी न था कि उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाय अथवा वह आत्मनियन्त्रण खो दे। उसका पिता बाबर उससे कहीं अधिक मादक द्रव्यों का सेवन करता था; अतएवं हुमायूं की चारित्रिक दुर्बलताओं को उसकी विफलता के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।

(3) विजय के उपरान्त आमोद प्रमोद की वासना

प्रायः हुमायूं पर यह लाँछन लगाया जाता है कि विजय प्राप्त करने के उपरान्त वह आमोद–प्रमोद में तल्लीन हो जाता था और अपने मूल्यवान समय को खो देता था। कहा जाता है कि गौड़ पर विजय प्राप्त करने के उपरान्त उसने अपने अमूल्य समय को इसी प्रकार विनष्ट किया था। परन्तु इस बात पर पहले विचार यिका जा चुका है कि बंगाल में हुमायूं अपनी परिस्थितियों से बाध्य होकर रुक गया था न कि भोग–विलास के लिये। अतएवं भोग–विलास की भावना का हम उसकी विफलता का कारण नहीं बतला सकते।

(4) शेरशाह तथा बहादुरशाह के संयुक्त मोर्चे का सामना

हुमायूं की विफलता का सबसे बड़ा कारण यह था कि उसे शेरशाह तथा बहादुरशाह के विरुद्ध एक साथ लोहा लेना पड़ा था। दोनों ही बड़े शक्तिशाली शासक थे और दोनों के विरुद्ध एक साथ लोहा लेने की हुमायूं में क्षमता न थी। बहादुरशाह ने धन से शेरशाह की बड़ी सहायता की थी; जिससे उसकी शक्ति बहुत बढ़ गइ थी।

(5) शेरशाह की योजना

यदि बहादुरशाह की सहायता न भी मिली होती तो भी शेरशाह अकेले ही हुमायूं को विफल बनाने के लिये पर्याप्त था। वह हुमायूं से अधिक अनुभवी, कूटनीतिज्ञ तथा कुशल राजनीतिज्ञ था। वह हुमायूं से अधिक चालाक तथा अवसरवादी था। संगठन करने की शक्ति भी शेरशाह में हुमायूं से अधिक थी। अतएवं शेरशाह के विरुद्ध हुमायूं का अन्त में विफल हो जाना अवश्यम्भावी था।

(6) अफगानों द्वारा राष्ट्रीय युद्ध

शेरशाह के नेतृत्व में अफगानों ने जो युद्ध आरम्भ किया उसने राष्ट्रीय युद्ध का रुप धारण कर लिया। यह युद्ध अफगानों के उन्मूलित राज्य की पुनर्स्थापना का युद्ध था। अतएवं अफगान सेना राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत थी और उसमें अपार उत्साह तथा उत्तेजना विद्यमान थी। वे प्राण–पण से मुगलों का भारत से निष्कासित करने के लिये दृढ़–संकल्प थे। अतएवं अत्यन्त संगठित होकर, अफगानों ने मुगलों से लोहा लिया और इसी से वे मुगलों को परास्त कर अफगान सम्राज्य को पुनः स्थापित करने में सफल हुए।

(7) तोपखाने के लाभ का अभाव

हुमायूं की विफलता का एक यह भी कारण था कि वह अपने पिता बाबर की भांति तोपखाने से पूरा लाभ न उठा सका। क्योंकि अफगानों के पास भी तोपखाना था और वह मुगलों के तोपखाने से कहीं अधिक अच्छा हो गया था। लाख प्रयत्न करने पर भी पाँच महीने तक रूमी चुनार के दुर्ग का भेदन न कर सका।

(8) अफगानों की तुलगमा का ज्ञान

भारत में बाबर की विजय का एक बहुत बड़ा कारण उनकी तुलगमा रण–पद्धति थी। वह अपनी सेना के दोनों किनारों पर तुलगामा सैनिक रखता था जो शत्रु को पीछे से घेर लेते थे। हुमायूं तुलगमा रण–पद्धति से कुछ लाभ उठा न सका क्योंकि अफगान लोग इस रण–पद्धतिका समझ गये थे और उससे अपनी सुरक्षा की पूरी व्यवस्था रखते थे।

(9) हुमायूं का अपव्यय तथा अधिक योग्यता का अभाव

हुमायूं की विफलता का एक बड़ा कारण अपव्यय तथ इसमें अधिक योग्यता का अभाव था। यह दुर्गुण उसे सम्भवतः अपने पिता से प्राप्त हुआ था। बाबर भी उपहार

तथा भेंट देकर अपने कोष को रिक्त कर देता था। हुमायूं को विफल आर्थिक नीति का परिणाम यह हुआ कि हुमायूं बंगाल में था तब केन्द्रीय सरकार हुमायूं की सेना को आर्थिक सहायता न कर सकी और सामान की कमी के कारण हुमायूं को बड़ी कठिनाई पड़ी। धनाभाव के कारण हुमायूं के शुभचिन्तकों तथा सहायको का उत्साह भंग हो गया। प्रो0 रशबुक विलियम्स का कहना है, "हुमायूं के काल में आर्थिक ध्वस्तता की कहानी फिर से दुहराई गई और इसके साथ–साथ क्रांति, षड्यन्त्र तथा एक राज–वंश का पतन हुआ।"

(10) चुनार पर अधिकार करने में विलम्ब

अनेक इतिहासकारों की यह धारणा है कि चुनार के लेने में विलम्ब हो जाने के कारण ही हुमायूं को अपना साम्राज्य खो देना पड़ा था। चुनार को लेने में हुमायूं को 6 महीने से अधिक लग गये और उसकी सारी सेना वहीं फंसी रही। इस बीच में शेर खाँ ने अपनी शक्ति को बहुत बढ़ा लिया और बंगाल को रौंद डाला और अपने साधनों में बड़ी वृद्धि कर ली।

(11) बंगाल से प्रस्थान करने में विलम्ब

बंगाल में शान्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित करने में, अपनी थकी हुई सेना की विश्राम देने तथा युद्ध–सामाग्री एकत्रित करने के कारण हुमायूं को लगभग चार महीने तक बंगाल में रुक जाना पड़ा। इस विलम्ब के परिणाम हुमायूं के लिये बड़े घातक सिद्ध हुए। शेर खाँ ने इस सुअवसर से पूरा लाभ उठाया। उसने बंगाल से आगरा जाने वाले मार्ग पर अपना पूरा अधिकार स्थापित कर लिया और हुमायूं के रसद प्राप्त करने के मार्ग को काट दिया। इसी समय हिन्दाल भी आगरे भाग गया। चौसा युद्ध में हुमायू की पराजय का यही सबसे बड़ा कारण था।

(12) हुमायूं का विश्वासी स्वभाव

हुमायूं सन्देहशील व्यक्ति न था और सबका विश्वास कर लेता था। इससे उसे अनेक बार धोखा खाना पड़ा। यदि वह शेर खाँ पर विश्वास न किये होता और थोड़ी सावधानी के साथ काम किये होता तो चौसा की दुर्घटना न घटी होती। हुमायूं की दुर्बलता से अफगानों ने अनेक बार लाभ उठाया और उसे धोखा दिया।

(13) हुमायूं का दुर्भाग्य

हुमायूं की विफलता का एक बहुत बड़ा कारण उसका दुर्भाग्य था। अनेक स्थलों पर भाग्य ने उसका साथ न दिया। यदि बंगाल का शासक महमूदशाह थोड़े समय तक शेर खाँ से अपने राज्य की रक्षा कर सका होता तो पूर्व स्थिति बिल्कुल बदल गयी होती और हुमायूं के पक्ष में हो गयी होती परन्तु उसकी विफलता ने हुमायूं को बहुत बड़ी कठिनाई में डाल दिया और स्थिति बड़ी संकटापन हो गई। कन्नौज के युद्ध के अवसर पर मई महीने के मध्य में सहसा इतनी अधिक वर्षा हुई कि उसके पड़ाव का स्थान जलमग्न हो गया। इससे हुमायूं को बड़ी असुविधा का सामना करना पड़ा और उसकी पराज्य में बड़ा योग मिला।

(14) हुमायूं में आवश्यक गुणों का अभाव

हुमायूं को जिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था उनमें सफलता प्रात्प करने के लिये कुछ विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक था परन्तु अभाग्य से हुमायूं मे उनका सर्वथा अभाव था। इसके विपरीत उसके विपक्षी शेरशाह में वे सभी गुण विद्यमान थे। हुमायूं के मस्तिष्क का गठन ऐसा था कि वह एक समय में केवल एक ही निश्चित तथा निर्वारित मार्ग पर चल सकता था। अतएवं जब उसकी मूल योजना असफल हो जाती थी और नई परिस्थिति में कार्य करना पड़ता था तब वह अपने को बिना सोचे–समझे नई–नई समस्याओं तथा परिस्थितियों का शिकार बना देता था और उनका सामना करने के लिये अपनी क्षमता का ठीक–ठीक मूल्याँकन नहीं कर पाता था। उदाहरणार्थ गुजरात तथा बंगाल जैसे सुदूरस्थ प्रान्तों मे जाकर युद्ध करने की कोई आवश्यकता न थी। मालवा तथा बिहार में अपनी

स्थिति को सुदृढ़ बना लेने के उपरान्त वह इन सुदूरस्थ प्रान्तों की विजय का कार्य कर सकता था। उसे अपने विजय का कार्य धीर–धीरे करना चाहिये था। हुमायूं को तीसरी दुर्बलता यह थी कि उसे मनुष्य तथा उसके उद्देश्यों की परख बहुत कम थी। इससे वह प्रायः धोखा खा जाता था। राजनीतिक स्थिति तथा प्रशासकीय समस्याओं के समझने की भी क्षमता उसमें न थी। एक राजनीतिक तथ कूटनीतिज्ञ के रूप में न तो वह अपने पिता बाबर की बराबरी कर सकता था और न अपने शत्रु शेरशाह की। उलझी हुई समस्याओं के सुलझाने की भी उसमें क्षमता न थी। अपनी इन दुर्बलताओं के कारण भी हुमायूं की विफलता का आलिंगन करना पड़ा था और एक प्रवासी का जीवन बिताना पड़ा था। हुमायूं की दुर्बलताओं पर प्रकाश डालते हुए डॉ0 ईश्वरी प्रसाद ने लिखा है, "उसकी सामान्य काहिली तथा उसकी अपार उदारता प्रायः उसकी विजय के फलों को नष्ट कर देती थी।" लेन पूल महोदय ने भी लिखा है, "परन्तु उसमें चरित्र तथा दृढ़ता का अभाव था। वह निरन्तर प्रयास करने में असमर्थ था और प्रायः वह विजय के अवसर पर अपने हरम में व्यसन–मग्न हो जाता था और अफीम के स्वर्गलोक में अपने मूल्यवान समय को व्यतीत कर देता थ।"

❑❑

आज़ादी के बअ़द

इदारा

सुमिरूं पहले मैं करतार
जो है सब का पालनहार
नबी से अपने उस को प्यार
रहमत उन पर लाखों बार

रहमते रब में सदा रहें
सभी सहाबा चारो यार
सुनो देश का मुझ से हाल
अदल बदल का लो विस्तार

गये अंग्रेज़ अंग्रेज़ा बाद
अक़्ल हमारी कर बर्बाद
साठ बरस से हैं आज़ाद
वही लड़ाई वही फ़साद

हिन्दू जलता मुस्लिम से
मुस्लिम में है बुग्ज़ो इ़नाद
ईसाई ईसा से दूर
सिख भूला है श्री अकाल

तस्लीमा भी है आज़ाद
और हुआ रुशदी आज़ाद
हाई कोर्ट का जज आज़ाद
हम जिन्सी करता आज़ाद

सेन्थेटिक का दूध मिले
ग्वाला है बिल्कुल आज़ाद
बने डाल्डा चर्बी से
फूड महकमा है आज़ाद

कौन बुराई ऐसी है
हुई नहीं है जो आज़ाद
फिर भी हम मायूस नहीं
उलमा भी तो हैं आज़ाद

सच्ची बात कहें गे वह
कहें गे यूं मत हो आज़ाद
आओ राह पे सीधी तुम
करो न अपने को बर्बाद

कह न सके जो सच्ची बात
वो तो नहीं हरिगज़ आज़ाद
शुक्र ख़ुदा का करता हूँ
क़लम हमारा है आज़ाद

होश में अब तो आजाओ
किया बहुत तुम ने बर्बाद
मेल की शक्ति पहचानो
भूला पाठ करो तुम याद

इल्म की क़ीमत पहचानो
इल्म की दौलत को जानो
लिखना पढ़ना हुनर हैये
शेअ़र शाअिरी हुनर है ये

जिस से रब की हो पहचान
इल्म उसी को दिल से जान
हक़्को बातिल की पहचान
इल्म के ज़रिअ़े से तू जान

इल्म मिलेगा आ़लिम से
हुनर मिलेगा फ़न्नी से
हुनर बिना यां गुज़र नहीं
सीख हुनर भी तू दिल से

हुनर से ग़फ़लत ठीक नहीं
हुनर बिना जीवन बेकार
नबातात और ह़यातियात
सीख कीमिया बन फ़नकार

तिब में भी ना पीछे रह
इल्मे हिन्दिसा तेरो यार
लहरों को कर क़ाबू में
कर ईजादें तू शहकार

टिकनालोजी तेरी हो
नहीं है इस में कुछ भी आर
बात पते की याद रहे
छूटे ना रब का दरबार

तीसरी क़िस्त

स्वतंत्रता संग्राम में नदवतुलउलमा की भूमिका

अनुवाद - हबीबुल्लाह आज़मी

अब्दुल वकील नदवी

मौलाना मुहम्मद हनीफ़ नदवी

चूंकि नदवा से शिक्षा प्राप्त करने वाले उल्मा ने हमेशा समय के अनुसार फैसला लिया, इसलिये मुझे लिखने में कोई सन्देह नहीं कि मौलाना मुहम्मद हनीफ़ नदवी गुजरान वाला भी उन्हीं ज्ञानी लोगों में शामिल हैं जिन्हों ने संकलन और लेखन में जो काम किया वह अपनी जगह पर मगर देश के लिये जो कुर्बानी दी क्या उस को देश वासी भुला सकते हैं। आपको मालूम होना चाहिये कि जिस समय आज़ादी के लिए पूरे देश में उथल–पुथल मची थी उस समय गुजरान वाला में "नवजवान भारत सभा" के नाम से स्वतंत्रा आन्दोलन से सम्बन्धित एक पार्टी बनाई गई। मौलाना उस के मेमबर थे और अंग्रेज सरकार के खिलाफ भाषण (तकरीरें दिया करते थे। जिस के नतीजे में गिरिफ़्तार हुए, मुकदमा चला और छः महीने के लिये जेल भेज दिये गये।

रिहाई के बाद इस्लामिया कालेज रेलवे रोड़ से मिली हुई मस्जिद में बत्ता और इमाम नियुक्त हुए और कुर्आन के शिक्षण का सिलसिला बहुत दिनों तक जारी रहा। मौलाना पत्रकारिता और कुर्आन के टीकाकार के रुप में बहुत विशेष स्थान रखते हैं, और आप लगभग छः सात पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के एडीटर रहे जिस में अल–एतसाम आप की बहुत मशहूर पत्रिका है जबकि आप पन्द्रह से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं और आपके "तफसीर सिराजुल बयान" के बहुत से एडीशन प्रकाशित हो चुके हैं।

मौलाना ने नदवतुल उलमा में पांच वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की और तफसीर (कुआन की टीका) में विशेषता प्राप्त करने के बाद आजमगढ़ दारुल मुसन्नीफीन में कुछ समय तक रह कर अपने वतन गुजरान वाला चले गये। आप की सेवा स्वीकरण (एतराफ) इसहाक़ भट्टी ने अपनी पुस्तक "नकूशे अज़मते रफता" में किया है।

तात्पर्य यह है कि मौलाना अनुसन्धानकर्ता कुर्आन के टीका कार, व्याख्याकर्ता, आलोचक, पत्रकार, धर्माचार्य, दार्शनिक (फलसफी) और साहित्यकार की हैसियत से सामने आए।

सैयद अशरफ नदवी और असहयोग आन्दोलन

1. आज़ादी के दौर (युग) में बहुत से आन्दोलन वजूद में आए जिस में एक सफल आन्दोलन असहयोग आन्दोलन (खिलाफत आन्दोलन) था। यह ऐसा आन्दोलन था जिसमें मदरसों, स्कूलों, कालेजों के विद्यार्थियों ने सबसे बढ़–चढ़ कर भाग लिया। 1913 का जमाना था जब सैयद नजीब अशरफ नदवी पटना कालेज में बी0ए0 के विद्यार्थी थे। इससे पहले कि परीक्षा देने की नौबत आती असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े और इसके सक्रीय कार्यर्ता हो गये। कुछ तसवीरों में वह बी अम्मां (मु0 अली जौहर की माता) के साथ भी दिखाई देते हैं जबकि उन की एक यादगार तस्वीर इस तौर पर भी मौजूद है जिसमें वह अपनी गर्दन पर खिलाफत लिखा झोला लटकाये हुए दिखाई देते हैं। इस के अतिरिक्त वह गांधी जी के साथ भी रहे और संस्कृत की पूर्ण क्षमता प्राप्त कर के सही विचारों से लोगों को पर्चित कराया। इस प्रकार उन्होंने बहुत सी राजनीतिक तथा कौमी कामों में भाग लिया और आज़ादी के आन्दोलन को शक्ति प्रदान की।

जब ख़िलाफत और असहयोग आन्दोलन का जोर कम हो गया तो आप ने अपनी शिक्षा पूरी की और एक मशहूर विद्वान प्रोफेसर तथा डाइरेक्टर के रुप में दुनिया के सामने आये। आप 1901 में जिला चाँदा (सी0पी0) के एक गांव दीसा में पैदा हुए। 1909 में उन्होंने नदवतुल उलमा लखनऊ में दाखिला लिया, आप के अध्यापक सैयद सुलैमान नदवी,

अल्लामा शिबली जैसे योग्य तथा संयमी विद्वान लोग थे। आपने दारुल मुसन्नीफीन में भी कार्यरत रहे और कई अनजुमनों के पदाधिकारी और समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं के लेखक और समपादक भी रहे।

इस्लाम के महान विचारक मौलाना सैयद अबुल हसन अली नदवी

मौलाना अली मियां नदवी मीम नसीम के इटरव्यू के प्रश्नों का उत्तर देते हुए लिखते हैं कि हकीम अब्दुल अली नदवतुल उलमा के प्रबन्धक राजनीतिक तौर पर बहुत ही दूरदर्शी थे, और बहुत दिनों तक जमीयतुल उलमा के साथ रहे लेकिन मेरा नियमित रुप से किसी राजनीतिक पार्टी से संबन्ध नहीं रहा। हाँ जेहनी तौर पर जमीयतुल उलमा से एक प्रकार का लगाव था और मुस्लिम लीग से कभी कोई संबन्ध नहीं रहा और मौलाना मदनी से हमारे खानदानी संबन्ध थे और उन का हमारे कुटुम्ब में विशेष दखल था। खिलाफत आन्दोलन के समय 1921,1922 में मैं केवल आठ नौसाल का था। हां अंग्रेज दुश्मनी हमारे पूर्वजों से चली आ रही थी। इसके अतिरिक्त हमारे खानदान का मौलाना आज़ाद और मौलाना महमूदुल हसन और देवबन्द के महापुर्षों से हमेश सम्बन्ध रहा।

मुलाकातें नाम से प्रकाषित पुस्तक के इन्टरव्यू में मौलाना और स्पष्ट करते हैं कि संसार में एक ऐसे गिरोह की आवश्यकता है जो पूर्णकालिक (हमः वक्ती) दीन का सेवक हो। हिन्दुस्तान में जो भी दीन बाकी रह गया वह आखिर उन्हीं अल्लाह के बन्दों के त्याग और संतोष के तुफैल (आधार के कारण) है। हमारे उलमा ने जिस पश्चिमी सभ्यता का आत्मविश्वास से मुकाबला किया उस का कारण है कि वह राजनीतिक व आर्थिक मोरचे पर दबे नहीं। 1956 के बाद से वह बराबर सरकारी पदों से दूर रहे। उन्हों ने स्वयं को पूरी तरह लेखन व रचना और दीन के प्रसार के कार्यों के लिये समर्पित किया और धैर्य, सहनशीलता, अल्लाह के भरोसे काम लिया।

इस्लाम के महान विचारक की उस समय उम्र भी कोई ख़ास जवानी तक नहीं पहुंची थी। उसके बाद आप की मिल्ली व कौमी सेवाओं की अगर समीक्षा की जाये तो हम समझते हैं कि आज़ादी के बाद हिन्दुस्तान में कोई ऐसी हमःगीर शख्सियत (सर्व भौम व्यक्तित्व) परवान नहीं चढ़ी जिस को बेहतर नेतृत्व ने न जाने कितने सत्य के खोजियों का मार्गदर्शन किया और बहुत से महत्वपूर्ण आन्दोलनों और संस्थाओं की हिचकोले खाती नावों को पार लगाया।

प्रबन्धक नदवतुल उलमा मौलाना सैयद राबे हसनी नदवी का जज़्ब–ए–आज़ादी

मौलाना सैयद राबे हसनी नदवी ने लखनऊ के उस घर में आंखें खोलीं जहां स्वतंत्रा आन्दोलन के बड़े से बड़े नेता और मार्गदर्शक आ कर ठहरते थे। जैसे इस आन्दोलन के माहन नेता मौलाना सैयद हुसैन अहमदमदनी वहां तशरीफ लाते ओर कई–कई दिन ठहरते और जब दारुल उलूम देवबन्द में मौलाना राबे हसनी नदवी ने समय व्यतीत किया तो हज़रत मदनी के मकान पर भी चन्द दिन ठहरे। इस प्रकार तनहाई और सम्मेलनों में उन्होंने हज़रत मदनी के जीवन शैली को देख कर स्वतंत्रा आन्दोलन के विचारों से लाभ प्रद हुए। डॉ0 सैयद अब्दुल अली आप के मामूं जो लखनऊ में जमीयतुल उलमा के प्रशंसकों में से थे।

मौलाना राबे हसनी नदवी, प्रबन्धक नदवतुल उलमा, की स्वतंत्रा आन्दोलन में जो भागीदारी है उसके बारे में लेखक के पूछने पर कहते हैं कि आज़ादी के समय मेरी उम्र बीस बाइस साल की थी और एक नवजवान को अपने मुल्क से जो प्रेम होता है वह भावना मेरे अन्दर भी थी। इसलिये मैं भी जलसे, जलूसों मे भाग लेता था और जमीयतुल उलमा जो कांग्रेस प्लेटफार्म का महत्वपूर्ण भाग था। जिस की देश सेवायें बहुत ही प्रतक्ष हैं, हम भी उस के सक्रीय सदस्य और वलेटियर के तौर पर काम करते झंडे लगाते और जलसों में शरीक होकर नारेबाजी करते और जमीयत के लिये जो भी कुर्बानी दे सकते थे वह देते। कौमी आवाज में लेख लिखते। अमीनाबाद का झंडे वाला ऐतिहासिक पार्क जो राजनीतिक पार्टियों और आन्दोलनों का केन्द्र हुआ करता था वहां जाते नज्म (कौमी कविताएं) पढ़ते, भाषण देते। मेरे बड़े भाई मौलाना सैयद मुहम्मद सानी हसनी ने "पाकिस्तान कैसा होगा" नज्म लिखी उस को कार्यालय में जाकर पढ़ता और दीवारों पर चिपकाता। यही उस समय के नवजवानों और बच्चों के स्वतंत्रा

आन्दोलन में भागीदारी के कार्य थे।

गंगाप्रसाद हाल, मुहम्मद अली लेन, बड़ी पकड़िया, खातून मंजिल, फिरंगी महल, अमीनाबाद में बड़ी घमा–घमी रहती। लीडरों का आना जाना भाषण व व्याख्यान मौसमे बहार होता और विभिन्न पार्टियों के बीच पार्टी की बुनियाद पर तनाव भी रहता। मौलाना फरमाते हैं चूंकि मुस्लिमलीग में शक्तिशाली मुसलमान भी बहुत से थे इसलिये बड़ी होशियारी व बुद्धिमानी से काम लेना पड़ता था।

एक दूसरे प्रश्न पर मौलाना ने रोशनी डालते हुए कहा कि वैसे तो बहुत से कौमे, राजनीतिक और मिल्ली मार्गदर्शकों से सम्पर्क आज़ादी से पहले और बाद में हुआ लेकिन स्वतंत्रा आन्दोलन के जमाने में किसी नेता से नियमित रुप से किसी लीडर से बहुत अधिक सम्बन्ध नहीं रहा सिवाए मौलाना हुसैन अहमद मदनी रहमतुल्लाह अलैहि के क्यों कि उनका हमारे खानदान व घर से बहुत गहरा लगाव था। अलबत्ता मौलाना अबुल कलाम आज़ाद और जवाहर लाल नेहरु जब नदवा आए और अब्बासिया हाल में स्वागत किया गया तो उन से मुलाकात हुई। इसके अतिरिक्त मौलाना मसऊद अली नदवी, मौलाना अब्दुल हलीम सिद्दीकी, मौलाना अबुल वफा शहजहांपूरी, जफरुल मुलक, मौलाना अब्दुल माजिद दरयाबादी से बहुत सम्पर्क और मुलाकात होती रही लेकिन राजनीतिक कम नदवा के तअलुक से अधिक।

क्योंकि यह लोग अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वान लोग थे जिन्होंने देश की आज़ादी में आवश्यकतानुसार भाषण और लेखन से भाग लिया। यद्यपि इस विषय मौलाना से विस्तार से बातें हुईं लेकिन सेवक ने यहां मौलाना की आज़ादी–ए–हिन्द के तअलुक जो जाती दिलचस्पियां और भूकिमा थी पेश कर रहा है अन्यथा माननीय मौलाना की ऐतिहासिक, शैक्षिक, धार्मिक, राष्ट्रीय मिल्ली, (तारीखी, इल्मी, दीनी, कौमी, मिल्ली) सेवाएं हिन्दुस्तान का इतिहास कभी भुला नहीं सकता क्योंकि माननीय मौलाना इस समय आलइण्डिया मुस्लिम परसनलला बोर्ड के अध्यक्ष, नदवतुल उलमा के प्रबन्धक और विभिन्न सम्मितियों के सदस्य, अध्यक्ष मदरसों और मस्जिदों के सरपरस्त, बहुत मुल्य पुस्तकों के लेखक, देश की अधिकांश उर्दू, अरबी पत्रिकाओं के सरप्रस्त कौमी व मिल्ली तौर पर तमाम लोगों के पोषक व सहायक (मुरब्बी व मुहसिन) इस्लाम और इस्लामी दुन्या और हिन्दुस्तान के मुसलमानों के गौरव वान पथ प्रदर्शक हैं तथा जाती तौर पर शराफत जुहद व तक़्वा (भक्ति व साधना) के रखवाले, इस्लामी शरीअत के रक्षक हैं। दुन्या की नज़र में अगर मौलाना सैयद अबुलहसन अली नदवी इस्लाम के महान विचारक (मुफक्किरे इस्लाम) थे तो मौलाना सैयद मुहमद राबे हसनी नदवा के बारे में यह कहा जा सकता है कि आप "मुदब्बिरे मिल्लत" हैं। माननीय मौलाना राबे साहब की जन्म तिथि 1929 है जो हिन्दुस्तान की आज़ादी के आन्दोलन का बड़ा नाजुक जमाना था।

....जारी

❑❑

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम....

और इन काफिरों से तुझे पाक रखूंगा; और तेरे को इन काफिरों पर हमेशा गालिब रखूंगा।"

फिर अल्लाह तआला के आदेश से हज़रत जिब्रील (अलैहि0) मकान के अन्दर गये और आपको वहाँ से निकाल कर चौथे आसमान पर ले गये। इस तरह आप कत्ल होने से बच गये। फिर जब यहूदी दुष्टों का गिरोह मकान में दाखिल हुआ, तो हज़रत ईसा (अलैहि0) को वहाँ न पाकर हैरान हुए। आपके एक साथी को अल्लाह ने आपका हमशक्ल बना दिया था। अतः उसे ईसा (अलैहि0) समझकर गिरफ़्तार कर लिया गया। उसे बहुत ही दर्दनाक कष्ट देने के बाद सूली पर चढ़ा दिया गया।

हज़रत ईसा (अलैहि0) के वास्तविक मृत्यु के बारे में रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हज़रत ईसा (अलैहि0) कयामत के क़रीब आसमान पर से नाजिल होंगे।

उस समय मुसलमानों और ईसाइयों के बीच जंग हो रही होंगी और मुसलमानों की क़ियादत और इमामत एक ऐसे व्यक्ति के हाथ में होगी, जिसका लकब "मेहदी" होगा। इन हालात में एक दिन दमिश्क की जामा मस्जिद में मुसलमान सुबह की नमाज़ के लिये जमा होंगे। नमाज़ के लिये इमामत हो रही होगी और हज़रत मेहदी इमामत के लिये मुसल्ले पर पहुंच चुके होंगे।

❑❑

किस्त 20

हिन्दी लिपि में उर्दू शब्दों का उच्चारण तथा अर्थ

— इदारा

नोट : बिन्दी वाले अक्षरों के उच्चारण स्थान, उर्दू वालों से सीखना आवश्यक है।

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ह़सीन	सुन्दर	ह़िफ़ाजत	सुरक्षा	ह़क़ीयत	आधिकार
ह़सीना	सुन्दरी	ह़िफ़्ज़	कंठस्थ	ह़क़ीर	हीन
ह़श्र	कियामत	ह़िफ़्ज़	सुरक्षा	ह़क़ीक़त	वास्तविकता
ह़श्र	लेखा जोखा दिवस	ह़िफ़्जानेसिहत	स्वास्थ्य रक्षा	ह़कीकत पसन्दी	यथार्थवाद
ह़श्र	एकत्र किया जाना	ह़िफ़्ज़ अम्न	शान्ति रक्षा	ह़कीकते ह़ाल	वस्तु स्थिति
ह़श्रात्सअलर्ज	कीडे मकोड़े	ह़िफ़्जे मातकद्दुम	पूर्व रक्षा	ह़कीकी	वास्तविक
ह़शम	सेवक	ह़क़	अधिकार	हुक्काम	अधिकारी गण
ह़शमत	महान्ता	ह़क़	अपना भाग	ह़िकायत	कथा
ह़िसार	प्राचीर	ह़क़	सत्य	ह़कम	निर्णायक
हुसूल	प्राप्ति	ह़क़े आसाइश	सुखाधिकार	हुक्मे इम्तिनाई	निषेधादेश
ह़िस्सा	भाग	ह़िक़ारत	तिरस्कार	हुक्म	आदेश
ह़िस्सादार	सह भागी	ह़क़ बजानिब	सत्यपक्षी	हुक्म बरदार	आज्ञाकारी
ह़ज़ारत	नागरिकता	ह़क़ परस्त	सत्यवादी	हुक्म बरदारी	आज्ञापालन
ह़ज़र	उपस्थित	ह़क़े तस्नीफ	रचनाधिकार	ह़िक्मत	ज्ञान, युक्ति
ह़ज़र निवास	स्थिति	ह़क़ तल्फी	स्वत्व हरण	ह़िक्मते अमली	कूटनीति
ह़ज़रत	श्रद्धेय	ह़क़दार	स्वत्वधारी	हुक्मराँ	शासक
हुजूरी	सम्मुख	ह़क़े रायदिही	मताधिकार	हुक्मरानी	शासन व्यवस्था
ह़ज़्ज़	स्वाद, आनन्द	ह़क़ रसी	न्याय प्राप्ति	हुक्म नामः	आदेशापत्र
ह़ज़्ज़	भाग	ह़क़े शुफ़्अः	पड़ोसी का क्रयधिकार	हुकूमत	शासन
ह़ज़्ज़े न्फ़्सानी	कामवासना	ह़क़ शिनास	सत्यापरिचित	ह़कीम	ज्ञानी वैद्य

पाठक जिस उर्दू शब्द का अर्थ जानना चाहेंगे अर्थ सहित छापा जायेगा।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

— डॉ0 मुइद अशरफ नदवी

कुवैत संसद में भी महिलाओं की दस्तक

कुवैत! यहाँ की संसद में महिलाओं ने चार सीटें जीत कर पहली बार अपनी मौजूदगी दर्ज कराई है। यह किसी खाड़ी देश के संसद में पहली बार हुआ है कि महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला है। कुवैत को श्रेय जाएगा कि उसके यहाँ महिलाओं को प्रवेश मिला। कुवैती महीलाओं को वर्ष 2005 में पहली बार चुनाव लड़ने और मत डालने का अधिकार दिया गया था।

गर्भपात को वैध बनाने की तैयारी

स्पेन सरकार गर्भपात पर लगा कानूनी प्रतिबंध हटाने पर विचार कर रही है। यह निर्णय रोमन कैथलिक देश में विवाद उत्पन्न कर सकता है जहाँ गर्भपात को धार्मिक दृष्टि से भी एक अपराध माना जाता है। वह जानते हुए भी कि इसका दुरुपयोग हो सकता है इससे संबंधित विधेयक स्पेन सरकार ने संसद में पेश कर दिया हैं। विधेयक के अनुसार यदि किसी महिला को गर्भधारण से कोई मानसिक परेशानी अथवा दिक्कत है तो वह गर्भधारण के 14वें सप्ताह तक गर्भपात करा सकेगी। विधेयक में यह भी प्रावधान है कि 16 वर्षीय लड़की अभिभावकों को बिना बताए भी गर्भपात करवा सकेगी।

चेतो वरना मिट जाओगे

हर साल तीन लाख जानें ले रही है ग्लोबल वार्मिंग, कोफी अन्नान ने आगाह किया

लदन! सन् 2030 तक ग्लोबल वार्मिंग दुनिया के सामने सबसे बड़ी चुनौती बन जाएगी। हाल ही में हुए एक शोध के अनुसार इस समय हर साल तीन लाख लोग ग्लोबल वार्मिंग के कारण मौत के मुंह में जा रहे हैं। आँकड़ों के मुताबिक आने वाले समय में यह तस्वीर और भी भयावह होगी। मरने वालों की संख्या पाँच लाख तक जाएगी।

ग्लोबल वार्मिंग के कारण गर्मी, बाढ़, तूफान और जंगलों में आग लगने की घटनाएं दुनिया भर में अप्रत्याशित रूप से बढ़ी हैं। इससे सतर्क हुई संयुक्त राष्ट्र के टीम, ग्लोबल ह्यूमैनिटेरियन फोरम, ने ग्लोबल वार्मिंग के मानव जीवन पर प्रभाव पर विस्तृत शोध किया है। यह टीम संयुक्त राष्ट्रके पूर्व महासचिव कोफी अन्नान के थिंकटैंक के रूप में भी जानी जाती है।

रिपोर्ट जारी करते हुए अन्नान ने साफ कहा 'दुनिया अब चौराहे पर खड़ी है। अब भी चेत जाएं तो गनीमत है लेकिन मौसम से छेडखानी का फल जरूर भुगतना पड़ेगा।' अन्नान ने ग्लोबल वार्मिंग से निपटने के उपायों में ढिलाई के लिये दुनिया भर के नेताओं को लताड़ा है। उनके अनुसार कमजोर नेताओं के कारण स्थिति इतनी खराब हुई है। इस रिपोर्ट को पूरी दुनिया के लिये अलार्म समझा जाए और सब ऐसे प्रस्ताव पर सहमत हो जाएं कि स्थिति काबू में रहे।

संघ का पूरा परिवार

भाजपा संगठन हिन्दू युवा वाहिनी
विद्यार्थी परिषद राष्ट्रीय सिख संगत
बजरंग दल सेवा भारती
भारतीय किसान संघ–
विद्याा भारती
विश्व हिन्दू परिषद–
भारतीय मजदूर संघ
दुर्गावाहिनी वनवासी कल्याण परिषद
हिन्दू स्वयंसेवक संघ
हिन्दू मुन्नानी पाँचजन्य और
ऑर्गनाइजर (अखबार)
हिन्दु विवेक केंद्र।

❑❑

व्यक्तिगत आजादी की सुरक्षा

इस्लाम का यह सिद्धांत है कि किसी भी नागरिक को कैद की सज़ा न दी जाए, जब तक की खुली अदालत में उसका अपराध साबित न हो। इस्लाम इसकी इजाज़त नहीं देता कि किसी व्यक्ति को सन्देह के आधार पर गिरफ्तार किया जाए और उसे बिना कोर्ट में मुकदमा चलाए और उसे बिना अपने बचाव का अवसर दिये जेल में डाल दिया जाए।